Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० (प्रो०) राधाकृष्ण शर्मा

के

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

★

का

★

मूल्यांकन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

क समर्पित जीवन : डॉ० राधाकृष्ण शर्मा

(लेखक : डॉ० जगदीश्वर प्रसाद राय, प्रधान सचिव,
भूमेश्वर समाज, गाजीपुर)
रीडर एवं अध्यक्ष भूगोल विभाग।
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय, गाजीपुर, उ० प्र०

डॉ० राधाकृष्ण शर्मा का जन्म सारण जिला के अन्तर्गत पिठौरी ग्राम में नवरी १९२० को एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। आपकी म्भिक शिक्षा ग्राम के बाद छपरा जिला स्कूल में हुई। पटना कालेज से ने आई० ए०, बी० ए० आनर्स और एम० ए० (इतिहास) की शिक्षा त की। १९४६ में आप डी० ए० वी० कालेज, सीवान में प्राध्यापक के पद नियुक्त हुए। दूसरे ही साल आप राजेन्द्र कॉलेज, छपरा में चले आये। ४९ में आप इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए। १९५३ में आपने पटना के कट स्थित कुम्हरार की खुदाई में पुरातत्व (खुदाई) सम्बन्धी व्यावहारिक क्षा प्राप्त की। १९६१ में इतिहास और प्राचीन भारतीय इतिहास एवं कृति विभाग के अध्यक्ष हुए और १९७१ में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग अध्यक्ष हुए। १९७९ में आपने बिहार विश्वविद्यालय से पीएच० डी० की ी प्राप्त की। १९८२ के आरम्भ में आपने अवकाश प्राप्त कर लिया। के बाद आप समाज सेवा, अध्ययन एवं लेखन कार्य में व्यस्त रहते हैं।

आप योग्य प्राध्यापक ही नहीं बल्कि एक सफल लेखक भी हैं। आपने हास विषयक अनेक पुस्तकों की रचना की है। कई पुस्तकें बिहार और र के बाहर के विश्वविद्यालयों में पाठ्य-पुस्तकों के रूप इन्टर से एम० ए० स्वीकृत हुई हैं। १९५८ में 'दुनिया की कहानी' नामक पुस्तक पर आपको ार सरकार की राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा ताम्रपत्र के साथ एक सहस्र मुद्रा सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया। आप बाल साहित्य के भी लेखक हैं। अंग्रेजी के अन्दर भी आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे बहुत ही कप्रिय भी हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आप अपने समय की कई बुराइयों से मुक्त हैं। सादा जीवन और उच्च विचार के आप प्रतीक हैं। आप कर्त्तव्य की पूजा करते रहे हैं। अध्ययन, अध्यापन, लेखन, समाज सेवा आपके मुख्य पेशे हैं। आप पूरे शाकाहारी हैं।

आप राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक हैं। आपने स्कूल और कालेज में पूरी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त की, किन्तु १९४७ के बाद से आप वहीं अंग्रेजी व्यवहार करते हैं जहाँ अनिवार्य होता है। आपने हिन्दी में ही इतिहास विषय की पुस्तकों की रचना की है। आप अब तक छोटी बड़ी पचास पुस्तकें लिख चुके हैं। पत्रिकाओं में भी आपके लेख प्रकाशित होते हैं। आप पुस्तक समीक्षक एवं शोध निर्देशक भी हैं। आप हिन्दी के माध्यम से इतिहास-विषयों पर शोध भी कराते हैं। आपकी भाषा और शैली सरल और सुबोध है। आप सरस्वती के उपासक और साहित्य के साधक हैं। अपनी साधना के दीर्घ काल में आपने निश्चय ही हिन्दी को बहुत ही समृद्ध किया है। सरकार और समाज की ओर से ऐसे साधक का उचित सम्मान होना चाहिए। यह दुःख एवं आश्चर्य की बात है कि अब तक इनकी ओर सरकार का ध्यान नहीं गया।

आप १९३७ से १९४५ तक छात्र के रूप में पटना में निवास करते रहे। इस अवधि के राष्ट्रीय आन्दोलन की गति तेज थी। सभी प्रमुख नेता पटना में आते रहते थे। आप उनकी सभाओं में उपस्थित होते थे और उनके भाषणों को सुना करते थे।

१९४० में आप रामगढ़ कांग्रेस में उपस्थित थे। उस समय आप पटना कालेज में बी० ए० आनर्स के छात्र थे। आपने १९४२ के आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। ११ अगस्त १९४२ को छात्रों का जो विशाल जुलूस निकला था उसमें आप शामिल हुए थे। पटना सचिवालय परिसर में जो गोली काण्ड हुआ उसमें आपके एक मित्र रामयश सिंह की एक भुजा में गोली लग गई। आप ही उन्हें अस्पताल पहुँचाये। उनके खून से आपके कपड़े भींग गये थे। आप १२ दिनों से अधिक उनके साथ रहकर उनकी सेवा भी करते रहे। उसके बाद आप भूमिगत होकर कार्यरत रहे। आपको १९४३ में ही एम० ए० (इतिहास) की परीक्षा देनी थी किन्तु १९४२ के आन्दोलन के कारण अध्ययन में बाधाएं पैदा हो गईं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आपके पिताजी रामाज्ञा शर्मा आपकी सुरक्षा और आपके अध्ययन के
य में चिन्तित रहने लगे। उनके स्वास्थ्य में क्रमशः गिरावट आने लगी।
४ में उनका स्वर्गवास भी हो गया। १९४५ में आप एम० ए० की परीक्षा
म्मिलित हो सके और आपने उत्तीर्णता प्राप्त की। १९४१ और १९४७
ीच ब्रिटिश शासनकाल में सभी आवश्यक योग्यताओं के बावजूद भी
ने सरकारी नौकरी के लिए कभी आवेदन-पत्र नहीं दिया। आपको
ापक और लेखक बनने की प्रबल इच्छा थी। अतः आपने कानून का
 करने के बाद भी परीक्षा नहीं दी। १९४६ में शिक्षा जगत में आपका
हो ही गया।

आप समाज सेवा में भी रुचि लेते रहे हैं। १९४३ में ही २ अक्टूबर को
के प्रयास से आपके ग्राम में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना हुई।
२ में इस पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव में बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डा०
ष्ण सिंह और नेपाल के तत्कालीन यातायात मंत्री श्री भद्रकाली मिश्र
थत हुए थे। पुस्तकालय बिहार सरकार से स्वीकृत है। यहाँ वयस्क
का केन्द्र भी स्थापित होता रहा है। पुस्तकालय के प्रचार-प्रसार में
ी गहरी रुचि है। आपने अपने थाना के अन्तर्गत स्थित लोक महावि-
नामक डिग्री कालेज में २५ हजार रुपये मूल्य की पुस्तकें तथा पत्र-
ाएं आदि देने के लिए स्वीकार किया है। आप अन्य पुस्तकालयों तथा
ओं में अपनी रचनाएं उदारतापूर्वक दिया करते हैं। राष्ट्रभाषा परिषद
ब्रह्मर्षि समाज कानपुर, सारण जिला पुस्तकालय संघ, छपरा अ. भा.
जनपदीय परिषद उजियार, बलिया (उ० प्र०), स्वामी स. न. सरस्वती
री समाज, नई दिल्ली और सप्त स्वर, छपरा के द्वारा आप सम्मानित
ये हैं। आप अखिल भारतीय इतिहास कांग्रेस, दिल्ली, स्वामी सहजा-
रस्वती हितकारी समाज, नई दिल्ली, अखिल भारतीय भोजपुरी
सम्मेलन, पटना और सर गणेश दत्त परिषद, बिहार, पटना, काशी
प्रचारिणी सभा, वाराणसी के आजीवन सदस्य भी हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहासकार :
डा० राधाकृष्ण शर्मा का अवदान

– रामजी

श्री शारदा-सदन-

पो०-असावर, गाजीपुर (उ

कवि-चिन्तक टी० एस० इलियट के अनुसार—'रचनाकार अपनी परम्परा में जीवित रहकर रचना को वर्चस्वी बनाता है।' इस इतिहास लेखन भी एक सर्जनात्मक प्रक्रिया प्रमाणित हुआ है, क्योंकि की ललित कृतियों का वह आधार बना है। यशस्वी इतिहास लेख राधाकृष्ण शर्मा (पूर्व प्राध्यापक एव अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास वि राजेन्द्र कालेज, छपरा, बिहार) ने उपर्युक्त कथन को अपनी बहुश: के सर्जन द्वारा उद्घाटित किया है। डा० राधाकृष्ण शर्मा जन्म सारण (बिहार) जनपद के पिठौरी नामक गाँव में 1 जनवरी ई० को ऐक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। आपके पिता श्री रामाज्ञा आपकी अध्ययन-प्रवृत्ति को निरन्तर प्रोत्साहित करने वाले उदार एवं प्रकृति के व्यक्ति थे। बचपन में प्रायः आप अस्वस्थ रहा करते थे-पर लिखाई के मामले में यह अस्वस्थता आपको बाधा देने में समर्थ न सकी। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव-पिठौरी के बाद छपरा, जिला में हुई। पटना कालेज से आपने आई० ए०, बी० ए० [आनर्स], और ए इतिहास) की शिक्षा प्राप्त की। ध्यातव्य है कि कक्षा आठ से एम० ए आपने अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण की। यद्यपि आपकी सारी पढ़ाई माध्यम से ही हुई, फिर भी अंग्रेजी राज्य में आपने नौकरी के लि आवेदन-पत्र नहीं दिया। इस संकल्पात्मक कृत्य के पीछे राष्ट्रीय आन के प्रति आपका अदम्य अनुराग था। प्रायः उस समय के प्रसिद्ध नेता भाषणों को सुनने आप जाया करते थे।

राधाकृष्ण शर्मा के लिए यह वही समय था, जो किसी भी रचनाक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनस-कल्प के निर्माण का आधार बनता है। इस आधार को प्राप्त करके ही सर्जक अपनी संस्कृति, अपनी भूमि, कला का सौन्दर्य और इतिहास के यथार्थ बोध की वास्तविक पहचान कर पाने में समर्थ हो पाता है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता, राष्ट्रवाणी हिन्दी और स्वदेशी परिधान के प्रति तीव्र अनुराग आपके इसी इतिहास-बोध की ऊर्जा को व्यक्त करते हैं। इतिहास-दृष्टि तात्विक बोध के अभाव में मात्र जड़ अतीतावलोकन बनकर रह जाती है। आपके शोध-प्रबन्ध 'नेशनेलिज्म सोशल रिफार्म एण्ड इण्डियन वुमेन' - जिसका प्रकाशनोपरान्त व्यापक स्वागत हुआ-में इसी तात्विक दृष्टि का उन्मेष मिलता है जिसके कारण १९४२ ई० के आन्दोलन में आपने भाग लिया। पटना सचिवालय परिसर में गोली काण्ड के अवसर पर कालेज के एक साथी श्री रामयश सिंह को गोली लगने पर आपने उन्हें अस्पताल पहुंचाया और कुछ दिनों तक उनकी सेवा में लगे रहे। तत्पश्चात् स्वतन्त्रता आन्दोलन में डढ़ साल तक भूमिगत रहकर सक्रिय रहे। खादी के प्रति आपकी निष्ठा छात्र जीवन से ही है, और इस क्षेत्र में आपकी रुचि अपरिवर्त्तनीय है। इसी भाँति हिन्दी भाषा के प्रति भी आपका प्रगाढ़ लगाव है। शोध-प्रबन्ध को छोड़कर आपकी सभी पुस्तकें हिन्दी भाषा में ही लिखित है। अत्यावश्यक होने पर ही आप अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। ...आपको १९४३ ई० में ही एम० ए० इतिहास की परीक्षा देनी थी, किन्तु १९४२ ई० के आन्दोलन में पड़ जाने के कारण परीक्षा में बाधा पड़ गई। आपके पिताजी आपकी सुरक्षा और अध्ययन के विषय में विशेष चिन्तित रहने के कारण १९४४ ई० में चल बसे। १९४५ ई० में आप एम० ए० की परीक्षा में सम्मिलित हो सके और उत्तीर्ण हुए। प्राध्यापक और लेखक बनने की प्रबल उत्कण्ठा के कारण कानून की शिक्षा लेने के उपरान्त भी आप परीक्षा छोड़ दिया करते थे। १९४६ ई० में शिक्षा जगत में अध्यापक के रूप में आपका प्रवेश (डी० ए० वी० कालेज, सीवान) हुआ। अगस्त १९४७ ई० में राजेन्द्र कालेज, छपरा में आप इतिहास विभाग मे व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए। १९४९ ई० में आप इसी कालेज में इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए। १९५३ ई० में आपने कुम्हरार (जिला-पटना, बिहार) में प्रसिद्ध पुरातात्विक डा. अलतेकर के सहयोगी के रूप में मौर्ययुगीन-सामग्री खुदाई में प्रशिक्षण प्राप्त करने के साथ-साथ अपनी सहृदयता का भी परिचय दिया। राजेन्द्र कालेज, छपरा मे ही १९६१ ई०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में इतिहास और प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति विभाग के अध्यक्ष हुए, और १९७१ ई० में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए। १९८२ ई० में आपने अवकाश ग्रहण किया। सम्प्रति आप पूरी निष्ठा के साथ अध्ययन, अनुसंधान, लेखन और निर्देशन कार्य से जुड़े हुए हैं। हाल ही में आपने 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर एक शोधग्रन्थ का निर्देशन किया है, जो शीघ्र ही प्रकाश्य है। फिलहाल आप राहुल सांकृत्यायन के साहित्य पर अनुसंधान कार्य में व्यस्त हैं।

प्रो० डा० राधाकृष्ण शर्मा—विश्व इतिहास, संस्कृति, तथा भारतीय इतिहास के गंभीर अध्येता और ख्यातिलब्ध लेखक हैं। आपकी पुस्तक—'दुनिया की कहानी'—(किताब महल, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित) में विश्व के प्रायः सभी देशों की सभ्यता और संस्कृति के विकास का इतिहास दिया गया है। यह पुस्तक प्रामाणिक, विद्वतापूर्ण और आकर्षक शैली में लिखित है। १९५८ ई० में इस पुस्तक को 'बिहार राष्ट्रभाषा, परिषद् ने—'हिन्दी की इतिहास विषयक पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ' घोषित करके एक सहस्रमुद्रा का पुरस्कार वार्षिकोत्सव के सभापति आचार्य डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी के कर-कमलों द्वारा ताम्रपत्र के साथ समर्पित कर लेखक को सम्मानित किया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में—"दुनिया के इतिहास की विशाल सामग्री को आपने बहुत सरलतापूर्वक उतारा है। आपकी भाषा बहुत सरल और प्रभाव-युक्त है। आपने इस रोचक ग्रन्थ को लिखकर एक आदर्श उपस्थित किया है। हिन्दी आपसे बहुत आशा कर सकती है।" वस्तुतः हिन्दी में अच्छे और मानक ग्रन्थों के अभाव को दूर करने के लिए १९४७ ई० से ही आप कृतसंकल्प और प्रयत्नशील रहे हैं। इस क्षेत्र में आपने बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। स्पष्टता और सुबोधता पर आप विशेष बल देते हैं। प्रामाणिक अभिज्ञान के फलस्वरूप आपकी कृतियों में सरलता, रोचकता और प्रभाव स्वाभाविक रूप से आ जाता है। आपकी कई पुस्तकें बिहार के बाहर प्रायः कई विश्वविद्यालयों—उज्जैन, दिल्ली तथा कुछ अन्य विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्वीकृत रही हैं। ये पुस्तकें इण्टर से एम० ए० तक छात्रों और पाठक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वर्ग में समादृत और लोकप्रिय हुई हैं। ऐसी पुस्तकों में—'दुनिया की कहानी'. (दो भाग), ग्रेट-ब्रिटेन का इतिहास, (दो भाग), 'ग्रेट-ब्रिटेन का संवैधानिक इतिहास', 'आधुनिक विश्व', 'आधुनिक यूरोप', 'प्राचीन विश्व की सभ्यता और संस्कृति', 'प्राचीन मिश्र', 'अमरीका का इतिहास', 'आधुनिक पश्चिम का उदय', प्राचीन-भारत', भारत का इतिहास'. (५ भाग) 'दिल्ली सल्तनत', 'मुगल कालीन भारत', 'मध्यकालीन भारत', 'आधुनिक भारत', 'भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन', 'राष्ट्रीय एकता', आदि पुस्तकें ख्याति प्राप्त कर चुकी है। उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त आपने बाल साहित्य के अन्तर्गत भी रोचक शैली में एक दर्जन पुस्तकों की रचना की है। राजपाल ऐण्ड सन्ज, दिल्ली जैसी विख्यात प्रकाशन संस्थाओं से प्रकाशित होकर ये पुस्तकें लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी हैं।

आपके बहुशः निबन्ध भी प्रकाशित हुए हैं। ये निबन्ध मात्र इतिहास और संस्कृति से ही सम्बन्धित न होकर साहित्य से भी जुड़े हैं। उदाहरणतः शीघ्र ही प्रकाशित—डा० विद्यानिवास मिश्र द्वारा संपादित ग्रन्थ—'आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा : समष्टिमय व्यक्तित्व' में आपका तत्सम्बन्धित निबन्ध प्रकाशित हुआ है। ब्र० पं० चंदाबाई अभिनन्दन-ग्रन्थ में प्रकाशित आपका निबन्ध 'प्राचीन कालीन बिहार' बहुचर्चित हुआ। निर्देशन और लेखन के साथ-साथ आप पत्र-पत्रिकाओं को भी समुचित रूप से संकलित और एकत्रित करने पर बल देते हैं। एक सक्षात्कार में आपने मुझ से कहा था कि इतिहास या साहित्येतिहास के लेखन में समाचार पत्रों और पत्र-पत्रिकाओं का समावेश और समुचित उपयोग करना चाहिए। आप पत्र-पत्रिकाओं में रुचिपूर्वक लिखते रहते हैं। 'इतिहास' 'जीवन साहित्य', 'गांधी मार्ग,' 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'विश्व ज्योति', 'इण्डियन रिव्यू', 'युवा शिल्पी', 'कबीर-सिद्धान्त', 'पुस्तकालय संदेश', 'बिहार' 'सर्चलाइट', आर्यावर्त्त', 'इण्डियननेशन', 'प्रदीप', आदि पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित हो चुके हैं, व होते रहते हैं।

डा० शर्मा अखिल भारतीय इतिहास कांग्रेस, दिल्ली व सर गणेशदत्त परिषद् पटना तथा अन्य बहुत सी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हैं। अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त आपकी पर्यटन में भी गहरी रुचि है। आप भारत का लगभग पूरा भ्रमण कर चुके हैं। आप उदात्त राष्ट्रवादी हैं। आपकी दृष्टि में भारत उच्च

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मानवतावादी संस्कृति का देश रहा हैं । सत्य, स्वतंत्रता, सद्भावना, सहनशीलता, अनेकता में एकता, सर्जनात्मकता, चिन्तन की साहसिकता आदि भारतीय संस्कृति के मूल्य रहे हैं । आपके अनुसार–"सम्प्रति देश में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। –यह दुनिया की तेज रफ्तार और पाश्चात्य संस्कृति की देन है। उपभोक्तावादी दर्शन का परिणाम है–जिसका अंधानुकरण करते हुए, अपनी परम्परा और संस्कृति को भूलते हुए हम सर्वनाश के उस कगार पर आ पहुंचे हैं, जहाँ से हमने यदि अब और अगला कदम बढ़ाया तो सारे देश और समाज का सत्यानाश हो जायेगा।' (साक्षात्कार,इन्डन्यूज,पटना, अगस्त १९९३ ई०) वस्तुत: डा० शर्मा के व्यक्तित्व में सादगी और सौम्यता के साथ-साथ स्पष्टता और स्वच्छता का मणि-कांचन सहयोग हुआ है । आप अपने समय की बहुत सी बुराइयों से मुक्त हैं। शाकाहार और सद्व्यवहार के आप्र प्रबल समर्थक तथ अतिथि सेवी हैं।

सरलता, शुचिता और संस्कृति के आग्रही–शर्माजी समाज-सेवा में गहरी रुचि लेते रहे हैं। १९४३ ई० में आपके प्रयास से आपके गांव में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना हुई। १९५० ई० में सारण जिला के तत्कालीन जिलाधिकारी श्री एम० के. चटर्जी ने पुस्तकालय को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की थी। १९५२ ई० में इस पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव में बिहार के प्रथम विद्वान मुख्यमत्री डा. श्रीकृष्ण सिंह और नेपाल के तत्कालीन यातायात मंत्री श्री भद्रकाली मिश्र उपस्थित हुये थे । वस्तुतः पुस्तकालयों और शिक्षा के प्रचार-प्रसार में आपकी गहरी रुचि है । आपने अपने अंचल में स्थित लोकमहामहाविद्यालय नामक डिग्री कालेज को पचीस हजार रुपये मूल्य की पुस्तकें पत्र-पत्रिकाएं [दान]की है। सारण जिला पुस्तकालय संघ, छपरा, ने पुस्तक एवं पुस्तकालय प्रेम के लिए आपको सम्मानित भी किया है। यों तो डा० शर्मा भाषा, क्षेत्र और अलगाववादी प्रवृत्तियों के चलते काफी उपेक्षित हैं—फिर भी पाठकीय संवेदना की प्राप्ति उन्हें निरन्तर सम्बल और सन्तोष प्रदान करती रहती हैं! राष्ट्रभाषा परिषद्, बिहार और अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद्, बलिया, उत्तर प्रदेश से आप सम्मान प्राप्त कर चुके हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१९९५ ई० में १२ फरवरी को स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज, नई दिल्ली ने आपको पुरस्कृत एवं सम्मानित किया है । इसी वर्ष में विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, जिला भागलपुर ने विद्यासागर (डी० लिट्) की उपाधि प्रदान कर आपका सम्मान किया है।

उपर्युक्त अवदान यशस्वी लेखक और इतिहासविद् प्रो० डा. राधाकृष्ण शर्मा की उदात्त प्रवृत्ति का एक रुपाय न है। वस्तुत: डा.शर्मा का सहज और वत्सल स्वभाव उनके पूरे व्यक्तित्व को एक अद्भुत मार्दव से दृप्त करता रहता है। उपनिषद्-शब्द की सार्थकता को उनके अध्यापक व्यक्तित्व ने एक नयी दीप्ति प्रदान की है । उनके पारदर्शी नेत्रों में एक अध्यापक की निर्मलता, एक साहित्यकार की संवेदना और एक इतिहासकार की गम्भीरता झलकती रहती है। ऐसे कृति व्यक्तित्व का समाज और सरकार की ओर से उचित सम्मान होना चाहिए। हमारी शुभकामना है कि आदरणीय डा० शर्मा जी स्वस्थ, सानन्द और शतायु रहकर अपनी सारस्वत साधना से सरस्वती के स्वराज्य को समृद्ध करते रहें ।

आप भारतीय इतिहास कांग्रेस, दिल्ली, स्वामी सहजानन्द हितकारी समाज; नई दिल्ली, सर गणेश दत्त परिषद्, बिहार, पटना और अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के आजीवन सदस्य हैं ।

छोटा परिवार सुखी परिवार होता है। डा० शर्मा का परिवार छोटा है। इनकी धर्म पत्नी श्रीमती उर्मिला शर्मा बहुत ही परिश्रमी और व्यावहारिक महिला हैं। ये घरेलू तथा कई अन्य बाहरी कार्यों को संभाल लेती है। ये डा० शर्मा की पांडुलिपियां भी साफ-सुथरा ढंग से लिख दिया करती हैं। ये प्रशिक्षित (शिक्षा) महिला थीं और सरकारी विद्यालय में इनकी नियुक्ति भी निश्चित थी। किन्तु डा० शर्मा की इच्छा के अनुसार इन्होंने नोकरी स्वीकार नहीं की। इस तरह इनमें डा० शर्मा के प्रति गहरी निष्ठा एवं बड़े त्याग की भवना भरी हुई है । इनके पुत्र श्री रमाशंकर शर्मा एम० ए० (इतिहास) अपने परिवार के साथ अन्यत्र रहते हैं । इनकी पत्नी श्रीमती

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गिरिजा कुमारी शर्मा, बी० एस सी०, बी० एड० एक उच्च विद्यालय में कार्यरत हैं। ये दोनों अपने बाल-बच्चों (आरती, पूजा और सौरभ) की भली-भाँति देख-भाल कर लेते हैं।

इस प्रकार डा० शर्मा पारिवारिक झमेलों और झंझटों से भी बहुत कुछ मुक्त हैं। एक सच्चे साधक की तरह शान्ति पूर्वक ये अपने समय एवं अपनी शक्ति का उपयोग सरस्वती, हिन्दी तथा समाज की सेवा में करते हैं।

★

प्रख्यात संत, दार्शनिक, शिक्षाविद् कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार, जीवनीकार, भारत की एक भव्य विभूति श्री आनन्द शंकर माधवन द्वारा किया गया मूल्यांकन :

क्या ही दीर्घकालीन साधना रही है उस आम्र वृक्ष की और उसे क्या मिला

—आनन्द शंकर माधवन

कोई भी समस्या हो, सफल और स्थायी समाधान उसका कलम के जरिये ही सम्भव है। मगर वह कलम तपो पूत मनस्वी ज्ञानवान पुरुष पुंगवों के हाथ में रहे तब कलमधारी सरस्वती—साधक चक्रधारी विष्णु के अग्रज होते हैं। जैसे बाल्मीकि, व्यासदेव, तुलसी, मीरा, सूर, कबीर आदि रहे हैं। आर्ष साहित्य परम्परा ही सही भारतीय लेखन परम्परा है।

डा० राधाकृष्ण शर्मा, विलक्षण साधन से सुसम्पन्न अप्रतिम सरस्वती आराधक हैं। उनकी कलम से सदा से ही अमृत ही झरता रहता है। जो भी पाठक उनकी पुस्तकों का अध्ययन करते हैं वे निस्संदेह तिमिर पुंज से और मोहबन्ध से मुक्त होकर स्वच्छ शुभ्र आकाश को ही हृदयंगम करने लग जाते हैं। मैं चाहता हूं उनकी पुस्तकें घर-घर में पहुंच जावे, प्रत्येक नर-नारी उन सबका अवलोकन अध्ययन करे। राष्ट्र सेवा की दृष्टि से डा० शर्मा की यह

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पावन कालजयी सरस्वती अर्चना अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक है। आश्चर्य है इस प्रकार की श्रेष्ठ पुस्तकें बाल-बच्चों की पाठ्य-पुस्तकों के रूप में क्यों नहीं स्वीकृत हो पाती हैं !

बात यह है देश का ही कोई मां-बाप रह नहीं गया है । बाल-बच्चों के लिए कोई भी द्रोणाचार्य तुल्य ऋषि कल्प गुरुजन रह नहीं गये । तब कौन निर्णय करेगा बच्चों के हाथ में कौन-कौन सी पुस्तके जानी चाहिए और कौन-कौन सी नहीं ।

डा० शर्मा इतिहास के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान एवं सारस्वत लेखक हैं। हिन्दी के वरेण्य लेखकों में उनका स्थान अद्वितीय है । मुझे यह लिखते हुए दुःख हो रहा है कि हिन्दी जगत से उनको अब तक भी पर्याप्त सम्मान नहीं हो सका है। और कौन यहाँ सम्मान देने वाले हैं भी ! एकबार कुछ मनचले लोग पहुंच गये अरस्तु के पास और उनसे कहने लगे हमलोग आपका अभिनन्दन करने आये हैं । अरस्तु ने उन्हें डाँटते हुए पूछा-तुम मूर्खों ने क्या समझा अरस्तु को कि अभिनन्दन करने पहुंच गये । अभिनन्दन करने वालों को अभिनन्दित से अधिक तपोपूत, सामर्थ्य, अध्ययन और ज्ञान चैतन्य अपेक्षित है तभी वे अभिनन्दित का समुचित मूल्यांकन कर सकेंगे । यह सुनकर सभा, मनचले जैसे हो आये वैसे ही वापस हो गये ।

यहाँ भी यही स्थिति है । क्या ही दीर्घकालीन साधना रही है उस विशालकाय ऋषिप्रभ अम्र तरूवर की ! और उसे क्या मिला : हाय, डा० शर्मा को किसने पहचाना :

डा० राधाकृष्ण शर्मा का अभिनन्दन भगवान करेंगे । अभी की स्थिति में निस्सदेह इसकी उम्मीद हिन्दी जगत से करना व्यर्थ है। अतः मेरी सलाह है चुपचाप अपनी साधना तपस्या में ही सदा तत्पर रहें ।

आज नहीं तो कल देश की स्थिति सुधरेगी। देश भी करवट बदलेगा । तब देवोपम राष्ट्र नायक भी उभर आयेंगे। तभी पूज्य पूजन होने लगेगा—

सेवा में,

डा० राधाकृष्ण शर्मा
उर्मिला कृष्ण भवन, मोहन नगर,
छपरा-८४१३०१ (विहार)

आनन्द शंकर माधवन
21-11-93
पो०-मन्दार विद्यापीठ
जिला-भागलपुर, बिहार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्राण मोहन "प्राण
महामंत्री
विजेन्द्र राष्ट्रभाषा परिषद्, बौंसी
महामंत्री
अंगिया संसद, बौंसी
मंत्री
संस्कृति बिहार, बौंसी
संवाददाता
"प्रदीप" दैनिक, पटना
हिन्दुस्तान

पो०–बौंसी
जिला–भागलपुर (बिहार)

पत्रांक.........................

दिनांक १८—१२—९३

मान्यवर,

आपके सारे पत्र मिलते रहे हैं। आपने सचमुच हिन्दी की बड़ी लम्बी सेवा की है। आप हिन्दी वट-वृक्ष हैं। कल जब पूज्य माधवन जी से मिलने गया तो उन्होंने कहा—पता नहीं हिन्दी का यह सूर्य (आप) अबतक हमसबों की नजरों से कैसे छिपा रहा।

भगवान मधुसूदन आप पर और आपके समस्त परिवार पर मंगल की वर्षा करते रहें, नव वर्ष की मेरी यही कामना है।

आपका ही
प्राण मोहन 'प्राण'

★

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास के मूक आराधकः डॉ० राधाकृष्ण शर्मा

रामगोपाल परिहार (हिन्दी विभागाध्यक्ष)

इतिहास के अध्येता विद्यार्थी इतिहास का अध्ययन करते समय भारतीय इतिहासकारों में डा० ईश्वरी प्रसाद और डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव एवं डा० रोमिला थापर की पुस्तकें पढ़ते हैं तो स्वतन्त्रतासेनानी, समाजसेवी राष्ट्रभाषा हिन्दी सेवी तथा राजेन्द्र कॉलेज छपरा (बिहार) के पूर्व प्राध्यापकएवं अध्यक्ष डॉ० राधाकृष्ण शर्मा की पुस्तकें पढ़ना भी न भूलते होंगे।

राष्ट्र भाषा हिन्दी में लिखीं गई उनकी पुस्तकों की भाषा सुबोध, सरल और सहज ग्राह्य होती है। 'दुनिया की कहानी', ग्रेट ब्रिटेन का राजनैतिक एवं संवैधानिक इतिहास, 'राष्ट्रीय एकता', 'प्राचीनविश्व की सभ्यता एवं संस्कृति' तथा 'विश्व इतिहास' राष्ट्र भाषा हिन्दी में उनकी उच्चकोटि की पुस्तकें हैं। डॉ० शर्मा, 'भारतीय-स्वाधीनता आन्दोलन के तो चश्मदीद गवाह रहे हैं।

बात यहीं तक नहीं है, दर्जनों इतिहास की पुस्तकें लिखने वाले डॉ० शर्मा, मात्र इतिहासकारही नहीं बल्कि उन्होंने बाल साहित्य, महापुरुषों की जीवनियों पर भी बड़ी सुन्दर पुस्तकें लिखीं हैं। सैकड़ों पत्र-पत्रिकाओं में डॉ० शर्मा का लेखन मंजिलदर मंजिल आगे बढ़ता रहा है और वर्तमान में भी उनकी लेखनी लेखन और सृजन में अपनी रफ्तार बनाई हुई है। डॉ० शर्मा के लेखकीय व्यक्तित्व में एक इतिहास कार वसाहित्यकार का ऐसा मिला जुला समन्वय है जिसके आधार पर यह कहना बड़ा मुश्किल होजाता है कि डॉ० शर्मा एक साहित्यिक इतिहासकार हैं या इतिहासकार साहित्यिक। डॉ० शर्मा के गरिमा मय व्यक्तित्व, कृतित्व से प्रभावित होकर अनेक संस्थानों, संस्थाओं और प्रतिष्ठानों ने उन्हें पुरस्कृत/सम्मानित किया है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह डाँ० शर्मा की व्यापक आराधनाकाही परिणाम था कि भारत के प्रथम रष्ट्रपति डाँ० राजेन्द्र प्रसाद से लेकर बिहार के राष्ट्रभाषा परिषद् के प्रथम निदेशक श्री शिवपूजन सहाय तक ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को सराहा है ।

राजनीतिज्ञ, स्वतन्त्रता सेनानी, समाजसेवी, शिक्षाविद्, प्रशासक, साहित्यकार, सम्पादक/प्रकाशक, प्राध्यापक, अध्यापक आदि सभी ने डाँ० राधाकृष्ण शर्मा के दीर्घकालान ऐतिहासिक एवं हिन्दी साधना को रेखांकित किया है ।

बिहार रज्य शासन, भारत सरकार एवं अन्य ऐतिहासिक उच्च शोध संस्थानों का भी यह दायित्व बनता है कि इतिहास के इस प्रखर अध्येता, राष्ट्रभाषा के सम्मान को बंधित करनेवाले इस लगनशील साधक व मूक आराधक को सम्माम देकर राष्ट्रीय उत्तरदायित्व व कृतज्ञता का परिचय दें ।

(रामगोपल परिहार)
हिन्दीविभागाध्यक्ष,
जबाहर नवोदय विद्यालय, हदगढ़
क्योंझर (उड़ीसा)-७५८०२१

—।★।—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेरे साथ पहली भेंट होने पर एक स्नातकोत्तर छात्र की प्रतिक्रिया

आज दिनांक २४-९-९४ को मुलाकात के आलोक में मान्यवर शिक्षाविद डा० राधाकृष्ण शर्मा जी के चरणो में दो शब्द समर्पित :-

हे शिक्षा जगत के रत्न एवं साहित्य की रीढ़ जिन पे हिन्दी के शब्दों रूपी कंकाल अड़ा हुआ है, आपसे आज मुलाकात होने पर मैं धन्य-धन्य हो गया। गुदरी में लाल छुपे होते हैं को आपने चरितार्थ किया है। भलेहीं राज्य सरकार या केन्द्र सरकार आपको अनदेखी करदे लेकिन शिक्षा-प्रेमी के हृदय में हमेशा आप प्रदीप्त होते रहेंगे। समय आयेगा कि शिक्षा के क्षेत्र में अपना उल्लू सिद्ध करने वाले कालनेमो का वद्ध अपने-आप हो जायगा और आप का नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्ण-अक्षरो में उद्धृत होगा क्यों कि इतिहास के पन्ने अभी भी खाली पड़े हैं। आप में जो मानवीय आकर्षण शक्ति है वह इने-गिने शिक्षाविदों में हो सकेगी। आप दया एवं विद्या के अथाह सागर है जिसका पार पाना कठिन ही नही मुश्किल है। हे मानसमतंग आपके पद पंकज भी शीलवान हैं। अपनी अमृतमयी वाणी से आप किसी को मुग्ध कर देगे। जैसा कि मेने सुना था आज आपको ठीक प्रायौगिक रूप में पाया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आपने अनाप-सनाप की बातो को छोड़ कर मात्र शिक्षा जगत की बातों पर ही विशेष रूप से चर्चा की। आप एक उंचे मंजिल तक पहुंचाने वाले सही दिग्दर्शक है।

आपसे बिना मिले किसी की शिक्षा अधूरी रह जायेगी। आज आपने मुझेअपना जीवन वृतांत सुनाया तो लगा कि गुलाब में तो कांटे भी हुआ करते हैं लेकिन आप में मात्र पुष्प ही पुष्प विखर रहें हैं। धन्य है वह शिष्य जिसने आपके शैक्षणिक ज्ञान का रसास्वादन किया है

शिक्षा के क्षेत्र में आपने जो शोध किया एक सराहनीय कार्य है और यह इस बात का द्योतक है कि आप शिक्षा जगत का मूल है जो घड़ रूपी शिष्यों को आजीवन सिंचित करने का व्रत लिया है।

अपने इस जीवन की अन्तिम घड़ी में शिष्यों को प्रसाद के रूप में शिक्षा देना एवं अन्य शिक्षा सम्बन्धी कार्यों का सम्पादन करना शिक्षा के प्रति अगाध प्रेम एवं निष्ठा नहीं तो और क्या हो सकता है। ईश्वरीय देन नहीं तो और क्या है जो आपमें इस अवस्था में भी शिक्षा से प्रेम रखना, पुस्तकालय को व्यवस्थित रखना, शैक्षणिक वातावरण तैयार करना, सामाजिक एवं आर्थिक परिवेशों से मुकाबला करना एवं किसी व्यक्ति को वर्तावं से मुग्ध करदेना आदि देखेजाते है। हे मानस के राजहंश , अब मैं ज्यादा क्या लिख सकता हूंक्यों कि मेरे पास तो उतना ज्ञान नही तथा शब्द मंडार नहीं शिष्य समझकर ये दो शब्द स्वीकार करेंगे और त्रुटियों का सुधार करेंगे यही मेरी कामना है।

एक प्रसिद्ध प्राध्यापक, ख्याति प्राप्त लेखक, स्वतन्त्रता सेनानी तो कुछ समाज सेवी होते है, यह तो स्वंयसिद्ध है।

आपका शिष्य

हरि रंजन कुमार सिंह

ग्रा०+ पो :— पिरौना

जिला (सारण)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक समर्पित जीवन

सुरेन्द्र प्रसाद चौरसिया

सम्पादक : जन अदालत (हिन्दी साप्ताहिक), छपरा

डा० राधा कृष्ण शर्मा का जन्म सारण जिला के अन्तर्गत पिठौरी ग्राम में १ जनवरी १९२० ई० को एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम के बाद छपरा जिला स्कूल में हुई। पटना कालेज से आपने बी० ए० आनर्स और एम० ए० (इतिहास) की परीक्षाओं में उत्तीर्णता प्राप्त की। इस बीच आपने १९४२ ई० के राष्ट्रीय आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। ११ अगस्त को छात्रों के विशाल जुलूस में आपने भाग लिया। सचिवालय गोलीमाड के अवसर पर भी आप वहाँ उपस्थित थे। आपके एक साथी को गोली लगी। आपने उन्हें पी० एम० सी० एच में पहुंचाया और वहाँ कुछ दिनों तक उनकी सेवा में भी आप तत्पर रहे। उसके बाद आप कुछ समय तक (एक डेढ़ साल) भूमिगत रहकर आन्दोलन में कार्यरत रहे। १९४६ ई० में आप डी. ए. वी. कालेज सीवान में प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति हुए। दूसरे ही साल आप राजेन्द्र कालेज, छपरा में चले आये। १९४८ ई० में आप इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए। १९५३ में आप ने पटना के पास स्थित कुम्हार की खुदाई में पुरातत्व सबंधी व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। १९६१ ई० में इतिहास और प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग के अध्यक्ष हुए और १९७१ ई० में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए। १९७९ ई० में आपने बिहार वि० वि० से पी० एच० डी० की डिग्री प्राप्त की। १९८२ ई० के आरम्भ में आपने अवकाश प्राप्त कर लिया।

आप योग्य प्राध्यापक ही नहीं हैं बल्कि एक सफल लेखक भी हैं। आपने इतिहास विषयक अनेक पुस्तकों की रचना की है। कई पुस्तकें बिहार और बिहार के बाहर के विश्वविद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों के रूप में इन्टर से एम० ए० तक स्वीकृत हुई है। १९५८ ई० में दुनिया की कहानी नामक पुस्तक पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आपको बिहार सरकार की राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा ताम्रपत्र के साथ एक सहस्त्र मुद्रा का सम्मान पुरस्कार प्राप्त हुआ। आप बाल साहित्य के भी लेखक हैं। इस श्रेणी के अन्दर भी आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे बहुत ही लोकप्रिय भी हैं। उनमें भारत की स्वाधीनता की कहानी और अम्बेदकर विशेष उल्लेखनीय हैं। हिन्दी सेवा

आप राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक हैं। आपने स्कूल और कालेज में अपनी पूरी शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम से प्राप्त की किन्तु १९४७ के बाद से आप वहीं अंग्रेजी का व्यवहार करते हैं जहाँ अनिवार्य होता है। आपने हिन्दी में ही इतिहास विषय की अनेक पुस्तकों की रचना की है। आप पुस्तक समीक्षक भी हैं।

पत्र-पत्रिकाओं में भी आपके लेख प्रकाशित होते हैं। आपकी भाषा शैली सरल और सुबोध है। आप सरस्वती के उपासक और साहित्य के साधक हैं। अपनी साधना के दीर्घ काल में आपने निश्चय ही हिन्दी को समृद्ध किया है। सरकार और समाज की ओर से ऐसे साधक का सम्मान होना चाहिए।

★

स्वातंत्र्योत्तर सारण के साधक-प्रवृत्ति एवं संत प्रकृति सच्चे-सपूतों का समुचित सम्मान : आखिर क्यों नहीं !

अविनाश नागदंश
पत्रकार एव समाज सेवक

यह हमारा एवं हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज के इस घोर उपभोक्तावादी युग में जिस प्रकार हमें हर बाहरी वस्तु, स्वदेशी की तुलना में ज्यादा आकर्षक और बेहतर लगती है, भले ही उसे स्वदेश-निर्मित उच्चतम गुणवत्ता वाली सामग्री के साथ अपने ही वतन के न जाने कितने अदरत मर्दों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का अकूत श्रम और कौशल, असंख्य स्वेद्कण, अनन्य निष्ठा और अनेक आशाएँ ही क्यों न जुड़ी हों–इसका हमें कोई ध्यान ही नहीं रहता, उसी प्रकार नैतिक मूल्यों के लगातार अवमूल्यन की वर्तमान दौड़ में बड़े शहरों में समुचित परिवेश एवं उचित अवसर पाकर अथवा विविध विवादों को हवा कर अथवा चापलूसी में निष्णात होने और राग-दरबारी के गायन में पटु होने के कारण चर्चित एवं लगातार पुरस्कृत होने वाले तथाकथित रचना-कारों, साहित्यकारों एवं कलाकारों को अपने यहाँ बुलाकर एवं सम्मानित कर स्वयं को कृत-कृत्य एवं गौरवान्वित तो महसूस करते हैं किन्तु, अपने पिछड़े शहर, अभावग्रस्त जिले अविकसित प्रमंडल एवं पिछड़े राज्य को दयनीय दशा से व्यथित होकर इनके विकास की वंदनीय आकांक्षा के कारण निःस्वार्थ भाव से यहाँ के जन-जन की निष्काम-सेवा के व्रत को अपने जीवन में अनुष्ठान बनाकर समस्त प्रलोभनों एवं पर्याप्त अवसरों को तिलांजलि देकर, सदा के लिऐ सारण एवं बिहार की पावन माटी के होकर रह जाने वाले, अपने सृजनशील उर्जावन जीवन का बहुमूल्य समय यहाँ के निवासियों की सर्वांगीण प्रगति के पावन उद्देश्य के लिए अर्पित कर देने वाले, प्रचार-प्रसार एवं चाटुकारिता से परहेज रखने वाले त्यागी मूर्धन्य विद्वानों, असाधारण सर्जक साहित्यकारों, कलाकारों तथा रचनाकारों को ओर अपनी कानी आँख को उठाकर तिरछी नजर तक से भी देखना गवारा नहीं करते । यह किसी भी उन्नत सभ्यता एवं संस्कृति के लिए गौरव नहीं बल्कि अतिशय दुर्भाग्य और दारुण-रुदन को स्थिति है ।

हाँ ! यदि अभावग्रस्त एवं अविकसित जन्मभूमि के विकास की सद्-कामना का प्रतिदान उपेक्षा एवं तिरस्कार है, यदि अपने पावनोद्देश्य के पीछे निष्काम भाव से अपनी समूची प्रतिभा, सृजनशीलता के साथ अपना संपूर्ण जीवन होम कर देने का प्रतिदान, गुमनामी एवं असम्मान है, यदि सम्पूर्ण छल-प्रपंच तथा व्यक्तिगत आलोचना-प्रत्यालोचना और चापलूसी की राज-नीति से दूर रहकर देश एवं समाज को अत्यन्त उपयोगी साहित्यिक कृतियों से समृद्ध करने का प्रतिपादन अपने जायज हक से भी वंचित कर दिया जाना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है जैसा कि हम सबने स्वाधीनतोपरांत सारण की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन, यहां तक कि सर्वस्व निछावर कर देने वाले सारण के सच्चे सपूत-साहित्यकारों, कलाकारों एवं समाजसेवियों के साथ १९४७ के बाद से १९९१ तक की महायात्रा में जैसा सलूक किया है वह किसी भी एक व्यक्ति नहीं बल्कि उस इलाके की सम्पूर्ण नस्ल के लिए शर्म और केवल शर्म तथा निन्दा की बात है क्योंकि यह सब देख सुन और गुण कर न सिर्फ हमारी वर्तमान युवा पीढी बल्कि आने वाली संततियां भी हमारे इन सत्ता के आदर्शों का अनुकरण करने में हिचकेगी, भागेगी और आगे चलकर प्रतिभा पलायन का निरन्तर चल रहा चक्र हमारे प्रमण्डल में सिर्फ द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी की प्रतिभाओं को, मजबूरी में यहां की सेवा के लिए छोड़ेगा, जिससे हम प्रगति की दौड़ में अग्रगामी होने के बजाय पृष्ठगामी होते चले जायेंगे। जिस कारण गौरवशील भारतीय गण राज्य के इस पावन ४३वें गणतन्त्र-दिवस की वेला में राष्ट्रीय अलंकरणों एवं सम्मानों की घोषणा की वेला में, प्रमंडल के लोकप्रिय तथा सर्वाधिक प्रसारित साप्ताहिक 'जन अदालत' के माध्यम से सुधी एवं गुण ग्राहक पाठकों एवं प्रदेश की जनता का ध्यान न्याय-शास्त्र के प्रणेता मुनी गौतम, महादानी एवं विद्वान ऋषि दधिचि, गुरुद्रोण, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, बाबू रघुवीर नारायण, प० रामावतार शर्मा, प० नलिन विलोचन शर्मा, आचार्य रामरक्ष पाठक, प० भरत मिश्र प्रकृत ऋषि-मुनियों तथा संतों साहित्यकारों को जन्म देने वाली ऐतिहासिक सारण की पावन माटी में स्वाधीनतोपरांत उपजे जाज्वल्यमान साधक-प्रवृत्ति एवं संत प्रकृति के सच्चे-सपूतों की उपेक्षा की ओर आकृष्ट करते हुए पाठकों का परिचय सारण के ही एक सपूत, देश की चोटी के इतिहासकार, मूर्धन्य विद्वान, सक्रिय स्वतन्त्रता-सेनानी एवं समाज सेवी साहित्यकार एवं लब्ध प्रतिष्ठित राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा के अवकाश प्राप्त इतिहास (स्नातकोत्तर) विभाभाध्यक्ष; डा० राधा कृष्ण शर्मा से करा रहा हूँ जिनका सम्पूर्ण जीवन इस भौतिकतावादी युग में भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सिद्धांत एवं सादगी एवम् देश रत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद की विद्वता एवं विनम्रता का आदर्श एवं अनुकरणीय समन्वय रहा है।

डा० राधा कृष्ण शर्मा का जन्म सारण जिला के अन्तर्गत पिठौरी ग्राम में १ जनवरी १९२० ई० को एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम के बाद छपरा जिला स्कूल में हुई। पटना कालेज से आपने आई० ए०, बी० ए० आनर्स

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और एम० ए० (इतिहास) की परीक्षाओं में उत्तीर्णता प्राप्त की । इस बीच आपने १९४२ ई० के राष्ट्रीय आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया ।

१९४६ ई. में आप डो.ए.बी. कालेज, सीवान में इतिहास विभाग में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए । दूसरे ही साल आप राजेन्द्र कालेज, छपरा में चले आये । १९४८ में आप इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए । १९५३ में आपने पटना के पास स्थित कुम्हरार की खुदाई में पुरातत्त्व (खुदाई) संबंधी व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की । १९६१ ई. में इतिहास और प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति विभाग के अध्यक्ष हुए और १९७१ ई० में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के अध्यक्ष हुए । १९७९ ई० में आपने बिहार वि० वि० से पी-एच० डी० की डीग्री प्राप्त की । १९८२ ई० के आरम्भ में आपने अवकाश प्राप्त कर लिया ।

आप योग्य प्राध्यापक ही नहीं है बल्कि एक सफल लेखक भी हैं । आपने इतिहास विषयक अनेक पुस्तकों की रचना की है । कई पुस्तकें बिहार और बिहार के बाहर के विश्व विद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों के रूप में इन्टर से एम० ए० तक स्वीकृत हुई है । १९५८ ई० में दुनिया की कहानी नामक पुस्तक पर आपको बिहार सरकार की राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा ताम्र पत्र के साथ एक सहस्र मुद्रा का सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया । आप बाल साहित्य के भी लेखक हैं । इस श्रेणी के अन्दर भी आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है । वे बहुत ही लोकप्रिय भी है । आप अपने समय की कई बुराईयों से मुक्त है । सादा जीवन औ उच्च विचार के आपप्रतीक है । आप कर्तव्य को पूजा करते हैं । अध्ययन, अध्यापन, समाजसेवा और लेखन आपके मुख्य पेशे हैं ।

हिन्दी सेवा

आप राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक हैं । आपने स्कूल और कालेज

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में अपनी पूरी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्राप्त की किन्तु १९४७ के बाद केवल आप वहीं अंग्रेजी का व्यवहार करते हैं जहाँ अनिवार्य होता है। आपने हिन्दी में ही इतिहास विषय की दर्जनों पुस्तकों की रचना की है। पत्र पत्रिकाओं में भी आपके लेख प्रकाशित होते हैं। आपकी भाषा और शैली सरल और सुबोध है। आप सरस्वती के उपासक और साहित्य के साधक है। अपनी साधना के दीर्घ काल में आपने निश्चय ही हिन्दी समृद्ध किया है। सरकार और समाज की ओर से ऐसे साधक का समुचित सम्मान होना चाहिए। शि

राष्ट्रीय आन्दोलन

आप १९४५ ई० तक छात्र के रूप में पटना में निवास करते रहे। इस अवधि में राष्ट्रीय आन्दोलन की गति तेज थी। सभी प्रमुख नेता पटना प्र आते रहते थे। आप उनकी सभाओं में उपस्थित होते थे और उनके भाषण को सुना करते थे।

१९४० ई० में आप रामगढ़ कांग्रेस में उपस्थित थे। उस समय आ पटना कालेज में बी० ए० आनर्स के छात्र थे।

आपने १९४२ ई० के आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। ११ अग १९४२ ई० को छात्रों का जो विशाल जुलूस निकला था उसमें आप शा थे। पटना सचिवालय परिसर में जो गोली कांड हुआ वहाँ भी आप ए एक साथी के साथ उपस्थित थे। उसमें आपके एक मित्र श्री रामयश ि को एक भुजा में गोली लग गई। आपही ने उन्हें पटना अस्पताल पहुंचाय खून से आपके कपड़े भींग गये थे। आप १०–१२ दिनों तक उनके साथ रह उनकी सेवा भी करते रहे। उसके बाद आप काफी समय तक भूमि रहे।

आपको १९४३ ई० में ही एम० ए० (इतिहास) की परीक्षा देना थ किन्तु १९४२ के आन्दोल के कारण अध्ययन में बाधाएँ पैदा हो गई।

आपके पिता जी आपकी सुरक्षा और अध्ययन के विषय में चिंति रहने लगे। उनके स्वास्थ्य में क्रमशः गिरावट आने लगी। १९४४ ई० उन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वर्गवास भी हो गया। १९४५ ई० में आप एम० ए० की परीक्षा में सम्मिलित हो सके और आपने उत्तीर्णता प्राप्त की।

१९४१ और १९४७ के बीच ब्रिटिश शासनकाल में सभी आवश्यक योग्यताओं के बावजूद भी आपने सरकारी नौकरी के लिए कभी आवेदन नहीं दिया। आपको प्राध्यापक और लेखक बनने की प्रबल इच्छा थी। अतः आपने कानून का क्लास करने के बाद भी परीक्षा नहीं दी। १९४६ ई० में शिक्षा जगत में आपका प्रवेश हो ही गया।

समाज सेवा

समाज सेवा मे भी आप रुचि लेते रहे हैं। १९४३ ई० में ही २ (अक्टू) आपके प्रयास से आपके ग्राम में एक पुस्तकालय की स्थापना हुई। १९५२ ई० में इस पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव में बिहार के प्रथम मुख्यमन्त्री डा० श्रीकृष्ण सिंह और नेपाल क तत्कालीन यातायात मन्त्री श्री भद्रकाली मिश्र उपस्थित हुए थे पुस्तकालय बिहार सरकार से स्वीकृत हैं। यहाँ कुछ समय तक वयस्क शिक्षा का केन्द्र भी रहा था।

पुस्तकालय के प्रचार प्रसार में आपकी गहरी रुचि हैं। आपने अपने थाना के अन्तर्गत स्थित लोक महाविद्यालय नामक डिग्री कालेज में २५,००० रुपये मूल्य की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं आदि देने क लिए स्वीकार किया है। आप अन्य पुस्तकालयों में भी अपनी रचनाएं खरीद कर भी दिया करते हैं। विगत दिनों आपने 'पं० राम सिंहासन मिश्र सार्वजनिक वाचनालय, खानपुर (एकमा) को पाँच सौ रु० मूल्य की पुस्तकें उपहार स्वरूप प्रदान किया है।

राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, ब्रह्मर्षि समाज कानपुर और सारण जिला पुस्तकालय सघ, छपरा के द्वारा आप सम्मानित किये गये हैं।

उम्र के इस पड़ाव पर चलकर भी डा० शर्मा की सक्रियता में कोई कमी नहीं आई है और उनकी दिनचर्या, आचार-व्यवहार, खान-पान आदि सब कुछ सदा ही नियमित है। आज भी देश के विभिन्न भागों से उन्हें विभिन्न

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संस्थाओं द्वारा स-सम्मान बुलाया जाता है, जिनमें वे अपने स्वास्थ्य एवं सुविधा का ख्याल रख प्रायः शामिल होते रहते हैं। विगत वर्ष से उन्होंने अपने मित्र एवं सहकर्मी प्रख्यात शिक्षाविद् एवं प्रदेश के सर्वोत्तम राजकीय कृत विद्यालयों में से एक, ल० ना० ब्रा० उच्च विद्यालय, छपरा के संस्थापक प्राधानाचार्य स्व० पं० सवलिया मिश्र की पुण्यस्मृति में उनके सहयोगियों सम्बन्धियों, शिष्यों एवं शुभेच्छुओं द्वारा स्थापित पं० सवलिया मिश्र फाउन्डेशन, छपरा द्वारा किए जाने वाले सभी शैक्षिणक गतिविधियों की देखभाल करने का दायित्व उठाते हुए फाउन्डेशन के डिन (एजुकेशन) का पद भार ग्रहण कर उन्होंने समाज सेवा के प्रति अपने आत्मिक जुड़ाव का परिचय दिया है।

डा० शर्मा देश की कई संस्थाओं के आजीवन सदस्य हैं। १९८५ ई० में १२ फरवरी को स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज, नई दिल्ली ने डा० शर्मा को स्वामी सहजानन्द समाज सेवा पुरस्कार प्रदान किया है। इस पुरस्कार के अन्तर्गत पाँच हजार एक रुपये, अंग वस्त्र तथा प्रशस्ति पत्र दिये गये हैं।

इसी साल १९८५ में विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ, जिला भागलपुर ने डा० शर्मा को विद्यासागर (डी० लिट्) की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया है।

स्वतन्त्रता सेनानी, इतिहास विद्, साहित्यकार, पुस्तकालय प्रेमी हिन्दी सेवी तथा समाज सेवी डा० राधा कृष्ण शर्मा के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन के लिए हमारी हार्दिक शुभ कामना तथा ईश्वर से प्रार्थना है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बिहार-सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा संस्थापित-संरक्षित परिचालित

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

का

वार्षिक कार्य-विवरण

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना

संचालक

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्

पटना-३

प्रो० राधाकृष्ण शर्मा

आप इतिहास के एक अच्छे विद्वान माने जाते हैं। आप सारण जिले (बिहार) के पिठौरी-ग्राम-निवासी हैं। आपका जन्म सन् १९२० ई० में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा छपरा जिला स्कूल में हुई थी। पटना कालेज से आपने क्रमशः बी० ए० (आनर्स) तथा एम० ए० की परीक्षाएं पास कीं। सन् १९४६ ई० में आप डी० ए० वी० कालेज, सिवान (सारण) में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। एक ही वर्ष के बाद आप राजेन्द्र कालेज छपरा में चले आये। सन् १९४८ ई० से आप उक्त कॉलेज में इतिहास विभागाध्यक्ष के पद पर सफलता पूर्वक कार्य कर रहें है। सन् १९५३ ई० में आपने पटना के पास स्थित कुम्हरार की प्रसिद्ध खुदाई में, जो पुरातत्व विशेषज्ञ तथा परिषद्-सदस्य डा० आनन्द सदाशिव अल्तेकर के निर्देशन में हुई थी, सक्रिय भाग लिया था तथा पुरातत्त्व-सम्बन्धी व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की थी। सन् १९४२ ई० के राष्ट्रीय आन्दोलन में भी आपने भाग लिया था। आप राष्ट्रभाषा के एक बड़े हिमायती हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में प्रमुख है—ग्रेटब्रिटेन का आधुनिक इतिहास तथा दुनिया की कहानी। परिषद् की ओर से 'आपकी दुनिया की कहानी' पुस्तक पर एक सहस्र मुद्रा का सम्मान-पुरस्कार दिया गया है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुलसचिव,
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय
दरभंगा

दूरभाष- { कार्यालय-२१७८
आवास-२१३८

कामेश्वरनगर, दरभंगा

पत्रांक................ ....

दिनांक..........25-10-94

महामान्यवर प्रो॰ शर्मा जी,

असीम शुभकामनाएं एवं

हार्दिक प्रणाम।

निसंदेह आप श्रद्धा के पात्र हैं एवं छपरा के प्रकाशि स्तंभ हैं। भगवान आपको लम्बी आयु प्रदान करें।

अनन्त शुभ कामनाएं।

आपका ही—
नागेन्द्र
25-1-94
कुल सचिव

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बी सत्यनारायण रेड्डी
राज्यपाल, ओड़िसा
B Satyanarayan Reddy
Governor, Orissa

No. 628/60
राजभवन
भुवनेश्वर-751001
Rajbhawan
Bhubneshwar
मार्च 8, 1995

प्रिय डॉ॰ राधाकृष्ण शर्मा जी,

आपका पत्र दिनांक 27-2-95 प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के जयपुर अधिवेशन में आप लोगों से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी। अब आपके पत्र से आपके कृतित्व का परिचय पाकर अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

आपके द्वारा प्रेषित निम्नलिखित पुस्तकें प्राप्त हुई हैं -

१ बाबासाहेब अम्बेदकर
२ हमारा देश हमारी एकता
३ आदर्श मानव अशोक
४ भारत की स्वाधीनता की कहानी
५ सभ्यता और संस्कृति
६ पारिवारिक हिंसा : समस्या और समाधान
७ ग्रेट ब्रिटेन का इतिहास

साथ में आपके परिचय-वृत्त आदि भी प्राप्त हुए हैं। आपकी लेखनी इसी तरह आगे बढ़ती रहे।

आपका
बी॰ सत्यनारायण रेड्डी

डॉ॰ राधा कृष्ण शर्मा,
उर्मिला कृष्ण भवन,
मोहन नगर,
छपरा (बिहार) ८४१३०१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi.

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Raj Bhavan
Agartala
सितम्बर 11, 1995

सत्यमेव जयते

Governor of Tripura

प्रिय शर्मा जी,

आपकी भेजी गई पुस्तकें मिलीं । आप वर्षों से साहित्य-साधना में रत रहे हैं और एक अध्यापक एवं लेखक के रूप में आपको जो ख्याति रही है उससे मैं परिचित हूं ।

आपने अपनी कुछ पुस्तकें मेरे अवलोकनार्थ भेजने की कृपा की है । इन्हें देखकर मुझे प्रसन्नता हुई । आपकी लेखनी सशक्त है और आपने सरस्वती की साधना वर्षों कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लिया है ।

आशा है, आप स्वस्थ-प्रसन्न होंगे ।
शुभ कामनों सहित,

आप का,

सिद्धेश्वर प्रसाद

डा० राधा कृष्ण शर्मा,
छपरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सत्यमेव जयते

बलिराम भगत

राज्यपाल राजस्थान

राज भवन

जयपुर-30200

कैम्प । माउण्ट आ

दिनांक जून 28, 199

प्रिय शर्मा जी,

आपकी हिन्दी में लिखित पुस्तकों का अवलोकन करने का मुझे सुअवसर मिला। आपकी भाषा, शैली, विचारों की अभिव्यक्ति स्पष्ट, सरल और सुबोध है। आशा है अधिकाधिक पाठक इन पुस्तकों के अध्ययन से पूर्णरूपेण लाभान्वित होंगे।

मैं सहर्ष आपकी हिन्दी सेवा की सराहना करता हूं।

भवदीय

बलिराम भगत

डा० राधा कृष्ण शर्मा

उर्मिला, कृष्ण भवन

मोहन नगर, छपरा (बिहार)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्मान पत्र

बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद् के सभापति और सदस्यों की ओर से परिषद् के सप्तम् वार्षिकोत्सव के अवसर पर हिन्दी के यशस्वी इतिहासकार, राजेन्द्र कालेज छपरा के इतिहास-विभागाध्यक्ष, प्रो० राधाकृष्ण शर्मा, एम. ए., को हिन्दी की इतिहास विषयक पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ उनकी 'दुनियाँ की कहानी' नामक पुस्तक पर एक सहस्र मुद्रा का पुरस्कार; वार्षिकोत्सव के सभापति आचार्य डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी के कर-कमलों द्वारा; इस ताम्र-पत्र के साथ समर्पित किया जाता है।

पटना, श्री रामनवमी, विक्रमाब्द शकाब्द १८८०, शनिवार, २९ मार्च १९५८ ईसवी।

शिवपूजन सहाय
संचालक

हजारी प्रसाद द्विवेदी
सभापति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मर्षि समाज कानपुर

ॐ

समवायो ही दुर्जयः

रजत जयन्ती वर्ष १९७७-७८

डा० राधाकृष्ण शर्मा

को

साहित्य एवं इतिहास

क्षेत्र में महत्व पूर्ण सेवाओं के लिए

★ **हार्दिक अभिनन्दन** ★

करते हुए हम

गौरवान्वित हैं

भा० प्र० शर्मा
(भागवत प्रसाद शर्मा)
स्वागताध्यक्ष

रामजी राय
(रामजी राय)
महामंत्री

ब्रह्मर्षि-समाज

कानपुर

संस्थापना रजत जयन्ती समारोह

२४-२६ मई, १९७८

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्मान-पत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः

अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद्

केन्द्रीय कार्यालय : उजियार, बलिया, उ० प्र०-२७७५०१

प्रशस्ति-पत्र

माननीय डा० राधाकृष्ण शर्मा, मोहन नगर, छपरा, बिहार

आपको साधुवाद देते हुए आपकी बहुआयामी अन्तरजनवादीय योजनाओं, राष्ट्रभाषा हिन्दी के क्षेत्र में की गई महत्वपूर्ण सेवाओं एवं सर्जनात्मक अवदानों के लिए अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद् आपकी सराहना करती है तथा मान्यता स्वरूप सन् १९९३ वाले सत्र में यह प्रशस्ति पत्र प्रदान कर अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करती है।

परिषद् की शुभकामना है कि आप इसी प्रकार समर्पित भाव से जनपदों की अपनी मूल्यवान सांस्कृतिक-सामाजिक सेवाएं अर्पित करते हुए दीर्घकाल तक सत्साहित्य की श्री वृद्धि करते रहें।

परिषद् आप जैसे सारस्वत साधक के परमायुष्य की कामना करती है।

स्वस्तिनः बृहस्पतिर्दधातु।

अनिल कुमार आंजनेय
महामंत्री

विवेकी राय
अध्यक्ष

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूरभाष पी० पी० २४५७

सारण जिला पुस्तकालय संघ

अध्यक्ष-कार्यालय
श्री नन्दन पुस्तकालय, छपरा
पत्रांक 17

महामंत्री-कार्यालय
रतनपुरा, छपरा
दिनांक···4-10-90

डा० राधकृष्ण शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग राजेन्द्र कालेज; छपरा (विहार विश्वविद्यालय) को साहित्य; इतिहास एवं पुस्तकालय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सेबाओं के लिए 5 सितम्बर 19-90 ई० बुधवार को शिक्षक दिवस के अवसर पर सारण जिला पुस्तकालय संघ के द्वारा सम्मानित किया गया।

रामाश्रय प्र० सिंह
4-10-90
पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री प्रमंडलीय पुस्तकालय
छपरा [सारण] सह
अध्यक्ष, सारण जिला पु० संघ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रमाण पत्र सं० १

दिनांक ! जनवरी 2, 94

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज

पंजीकृत आदर्श स्वयं सेवी संस्था

109-पी आराम बाग, नई दिल्ली-110055

दूरभाष ।523604

प्रमाणित किया जाता है कि समाज द्वारा अखिल भारतोय स्तर पर आयोजित अन्तः सदस्यीय लेख प्रतियोगिता वर्ष 1993 विषय बदलते परिवेश में विवाह का स्वरुप पर उत्कृष्ट लेख हेतु श्री डा० राधा कृष्ण शर्मा पुत्र स्व० रामाज्ञा शर्मा निवासी मोहन नगर, छपरा, बिहार को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

सुखद भविष्य की हार्दिक शुभ कामना।

त्रिलोकी नाथ राय	जय प्रकाश राय	विरेन्द्र कुमार राय
(त्रिलोकी नाथ राय)	(जयप्रकाश राय)	(विरेन्द्र कुमार राय)
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	महा सचिव

दिल्ली-११००९१
२४-१-१९९४

आदरणीय शर्मा जी,

सादर नमस्कार। १५ जनवरी के कृपापत्र एवं सामग्री हेतु हार्दिक आभार स्वीकार करें। विराट 'हिन्दी साहित्य का वस्तुपरक इतिहास' में इतिहास-संदर्भ एक प्रकरण तथा 'बाल साहित्य' प्रकरण में आप एवं आपके प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख कर दिया है।

अपनत्व बनाए रहें।

सादर,

राम प्रसाद मिश्र

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद्

उजियार (बलिया) उ० प्र०

आचार्य पण्डित कुलदीपनारायण 'झड़प'

के ८३ वें जन्मदिन

(जनपदीय दिवस)

के

अवसर पर

जनपदीय भाषा–साहित्य–अनुरागी विश्रुत साहित्य मनीषियों को सम्मानित करते हुए परिषद् गौरवान्वित है।

सम्मान्य साहित्य मनीषी :

- O डा० जितेन्द्रनाथ पाठक, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर
- O श्रीमती प्रतिभा मिश्र, प्रबन्ध सम्पादक, हिन्दी अकादमी पत्रिका, हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश)
- O डा० राधाकृष्ण शर्मा-मोहन नगर, छपरा (बिहार)
- O श्री चन्द्रमा शर्मा 'रसेश-सम्पादक, 'देश और समाज' कलकत्ता (प० बंगाल)

समारोह स्थल : लिलकर, जिला-बलिया (उ० प्र०)

दिनांक : ३० जुलाई ९३, शुक्रवार

समय : २ बजे अपराह्न

आप सादर आमंत्रित हैं।

सादर

डा० विवेकी राय
अध्यक्ष

अनिल कुमार 'आंजनेय'
महामंत्री

अ० भा० अन्तर जनपदीय परिषद्, उजियार, जिला-बलिया-२७७५०१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२४ अगस्त १९९३

राष्ट्रीय सहारा, नयी दिल्ली, मंगलबार

संक्षिप्त

इतिहासकार डा० शर्मा सम्मानित

छपरा, (स०स०)। प्रसिद्ध इतिहासविद् डा० राधकृष्ण शर्मा को भूमीश्वर समाज, गाजीपुर तथा अखिल भारतीय अन्तरजनपदीय परिषद् बलिया द्वारा समाज तथा इतिहास एवं हिन्दी की सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। विदित है कि इतिहास तथा बाल साहित्य में उनके द्वारा 48 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं तथा वे स्वतंत्रता सेनानी भी हैं।

मेरे निर्देशन में हिन्दी में तैयार शोध पत्र पर पीएच० डी० की डिग्री प्राप्त।—

(१२) हिन्दुस्तान, पटना, मंगलवार, १३ जुलाई १९९३ ई०

वैद्यनाथ पाण्डेय, सदस्य, विहार विधान परिषद पति श्रीमती (डा०) गिरिजा देवी, एम० पी० को दिनांक १० जुलाई, १९९३ को बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा पी एच० डी० को उपाधि से सम्मानित किया गया इनके शोध का विषय था—'स्वामी सहजानन्द सरस्वती-व्यक्तित्व एवं कृतित्व' जिसका निर्देशन राजेन्द्र कॉलेज छपरा के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा० राधाकृष्ण शर्मा ने किया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेरे द्वारा की गई हिन्दी सेवा के सम्बन्ध में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के महान विद्वान आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा की सम्मति :—

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा

अध्यक्ष

बिहार संस्कृत अकादमी

दूरभाष : ५०५७३

पथ–४ राजेन्द्र नगर

पटना–८०००१६

४-१०-९०

पूर्व कुलपति, पटना विश्वविद्यालय

डा० राधाकृष्ण शर्मा इतिहास के अनुभवी प्राध्यापक और लोकप्रिय लेखक हैं। इन्होंने सामान्य पाठकों और छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनका अच्छा स्वागत हुआ है। मुझे इस बात से विशेष प्रसन्नता हुई कि शर्माजी ने बालोपयोगी साहित्य की रचना द्वारा सुकुमारमति पाठक वर्ग में सात्विक एवं राष्ट्रीय भावों के संचार का भी स्तुत्य प्रयत्न किया है। शर्मा जी की अभिव्यंजना रोचक तथा भाषा सुबोध है। लेखक के ये गुण ज्ञान के प्रसार में सहायक होते हैं।

मैं डा० राधाकृष्ण शर्मा के विद्याव्यसन एवं हिन्दी सेवा का आदर करता हूं और कामना करता हूं कि इनके द्वारा लिखित साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार और उनके यश का विस्तार हो।

देवेन्द्रनाथ शर्मा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Phone { 374016
374248

केन्द्रीय भारत सेवक समाज

CENTRAL BHARAT SEVAK SAMAJ

Founder President : Late Pt. Jawaharlal Nehru first Prime Minister of India

President : Gulzari Lal Nanda, former Union Home Minister

M. Swami Harinaraynanand
Chairman

22, Sardar Patel Marg
New Delhi-110021

श्री राधकृष्ण शर्मा की हिन्दी सेवा

मैं बहुत वर्षों से विख्यात हिन्दी पुस्तक लेखक प्रो० राधाकृष्ण शर्मा को निकट से जानता हूं। अपने विद्यार्थी जीवन से ही इनकी प्रतिभा तथा कर्मठता से मैं प्रभावित रहा हूं। राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा के इतिहास विभाग के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष के रुप में तथा हिन्दी के अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक के रुप में इनकी हिन्दी सेवा की प्रशंसा विद्वानों ने की है। राष्ट्रीय स्वाधीनता के बाद राष्ट्र भाषा हिन्दी के विकास तथा प्रचार-प्रसार में इनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दी की प्रगति तथा बोधगम्य एवं शिक्षात्मक आलेखों एवं लेखों में इनकी विशेष अभिरुचि हिन्दी की सेवा के लिये उत्कट अभिलाषा की द्योतक रही है।

ऐसे प्रतिभाशाली समर्पित हिन्दी सेवी का उचित सम्मान सरकार तथा जनता को करना चाहिये।

ह०
म० स्वामी हरिनारायणानन्द
१३-३-८५

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजपाल एण्ड सन्स
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
कश्मीरी गेट, दिल्ली—७

ई। ११५३५ — १४ सितम्बर १९७०

प्रोफेसर राधाकृष्ण शर्मा
मोहन नगर, छपरा (बिहार)

मान्यवर प्रोफेसर साहब

सादर प्रणाम,

आशा है आप सपरिवार पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। यह पत्र हम आपकी सेवा में एक विशेष प्रयोजनवश लिख रहे हैं और वह यह है कि श्री सत्यदेव नारायण सिन्हा कृत "बिहार" नामक पुस्तक जिसे हम भारत-दर्शन-माला के अन्तर्गत प्रकाशित करना चाहते हैं, वह केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में पुस्तकों के लेखन, अनुवाद तथा प्रकाशन की योजना के अन्तर्गत स्वीकृत की गई है उनके नियमानुसार इस पुस्तक पर पुनरीक्षक का प्रमाण-पत्र चाहिए। इस कार्य के लिए हमने आपका नाम उनको सुझाया था, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। हम आपकी सेवा में इस पुस्तक की पाण्डुलिपि अलग रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भिजवा रहे हैं। कृपया संलग्न पुनरीक्षण प्रमाण-पत्र की तीन प्रतियों पर अपने हस्ताक्षर करके इन तीनों को ही हमें लौटा दें।

सधन्यवाद

आपका
ईश्वरचन्द्र
निदेशक

संलग्न : पुनरीक्षक के प्रमाण-पत्र की तीन प्रतियां

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(दूर- ३८७४१३)

साहित्य-समारोह से सम्बद्ध

साहित्यिक कोश

क्र।स।स। ३१

३३, फिरोजशाह रोड
नई दिल्ली–1
दिनांक ८-1-७१

सेवा में,

श्री राधाकृष्ण शर्मा, छपरा

मान्यवर महोदय,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि साहित्य-समारोह के तत्वाधान में साहित्यिक कोश प्रकाशित हो रहा है। यह एक वार्षिक प्रकाशन है। इसमें हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के लगभग २००० प्रतिष्ठित साहित्यकारों, लेखकों और पत्रकारों का संक्षिप्तसचित्र परिचय, उपलब्धियां और प्रमुख रचनाओं का विवरण प्रकाशित किया जा रहा है।
साहित्यिक कोश के नियमों के अनुसार आप भी उपरोक्त श्रेणियों में से एक में आते हैं। इसलिए साहित्यिक कोश में आपका संक्षिप्त परिचय और योगदान को समावेश करने का निश्चय किया गया है। इसी हेतु आपकी सेव में साहित्यिक कोश प्रश्नावली भेजी जा रही है। यदि आपका इस प्रश्नावली के उत्तर 28-2.71 तक हमारे कार्यालय को प्राप्त हो जायेंगे तो निश्चित हीं आपको कोश में स्थान मिल सकेगा।

नव वर्ष आपके लिए मंगलमय हो यही कामना है।

सविनय आपका,
भनिसेन दीक्षित
प्रधान सम्पादक
साहित्यिक कोश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूरभाष—2488 पी॰पी॰

ज्ञान ! शील !! एकता !!

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

छपरा—841301

पत्रांक 7/88

दिनांक 11-1-88

सेवा में,

डा॰ राधाकृष्ण शर्मा

मोहन नगर, छपरा

विषयः—परिषद् द्वारा आयोजित "विवेकानन्द जयती समारोह" में मुख्य अतिथि के सम्बन्ध में। समय ३ बजे

मान्यवर,

निवेदन है कि अखिल भारतीय 'विद्यार्थी' परिषद्, छपरा इकाई ने "विवेकानन्द जयंती समारोह" आयोजित की है। इस कार्यक्रम में आपको मुख्य अतिथि के लिए आग्रह करता हूं।

अतः आपसे आग्रह है कि उपर्युक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर हमारे कार्यक्रम को सफल बनायें।

इन्हीं आग्रहों के साथ,

भवदीय

(प्र॰ जोतीश चन्द्र)

अंग्रेजी विभाग

जगदम महाविद्यालय, छपरा

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख

अ॰ भा॰ विद्यार्थी परिषद्, छपरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीमती उमा पाण्डेय
राज्य मन्त्री
लोक निर्माण एवं पर्यटन विभाग
बिहार, पटना

दूरभाष। { कार्यालय । २१८४५
आवास : २४८३०

पत्रांक—८३७ दिनांक—१९-४-८२

आदरणीय योगेश जी,

मैं आपका ध्यान प्रो० राधाकृष्ण शर्मा, एम०ए०, पी एच-डी०, भूतपूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा की ओर आकृष्ट करना चाहती हूँ। श्री शर्मा ने इतिहास का अध्यापन राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा में स्नातकोत्तर स्तर तक किया है। अब वे सेवा-निवृत्त हो चुके हैं। यद्यपि उनकी शिक्षा अंग्रेजी में हुई है, किन्तु अध्यापन का कार्य इन्होने हिन्दी में ही किया है। इतिहास की बहुत सी पुस्तकें इन्होंने हिन्दी साहित्य में लिखी है, जिसके अवलोकन से आपको इनके साहित्यिक होने का आभास मिलेगा। पत्र के साथ संलग्न उनकी हिन्दी सेवा सम्बन्धी विवरणी से इस बात की पुष्टि होगी। राज्य सरकार द्वारा ऐसे लेखकों को जिन्होंने हिन्दी भाषा एवं हिन्दी साहित्य की सेवा की है, पुरस्कृत करने की योजना बनायी गई है।

मेरी अनुशंसा होगी कि श्री शर्मा को उनके द्वारा की गई सेवाओं के लिए पुरस्कृत की जाय।

अनु०—यथोक्त

भवदीय,
ह०
उमा पाण्डेय

श्री योगेश्वर प्रसाद 'योगेश'
मन्त्री, लोक निर्माण एवं राजभाषा,
बिहार, पटना

ज्ञापांक—८३८ पटना, दिनांक १९-४-८२

प्रतिलिपि—प्रो० राधाकृष्ण शर्मा, मोहन नगर, छपरा को सूचनार्थ एवं आवश्यक कारंवाई हेतु प्रेषित।

उमा पाण्डेय
१९-४-८२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'

गौतम—आश्रम
हृदयेश-पथ, नखास
गाजीपुर-२३३००१ (उ० प्र०)
दिनांक ७-७-९३

प्रिय शर्माजी,

सप्रेम वन्दे ।

आपके जीवन तथा आपके प्रकाशनों की उपयोगी जानकारी देने वाले बुकलेट के साथ आपका १-७-९३ का पत्र मिला, प्रसन्नता हुई । इतिहास के संबंध में आपने कल्पनातीत काम किया है । आपने इतिहास तथा हिन्दी-साहित्य में अपना सांस्कृतिक नाम अमर कर लिया तथा मेरे जैसे अपने सामान्य परिचितों को भी गौरवान्वित कर दिया है । इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई शुभकामनाओं के साथ स्वीकारें ।

आपने किसी डिग्री कालेज में पुस्तकालय के निर्माण एवं विकास के लिए दायित्व स्वीकारा है, यह जानकारी सुखद रही ।

आशा है आप सपरिवार सानन्द होंगे । याद करने के लिए धन्यवाद । जब तब इसी तरह याद कर लिया करेंगे तो सुख मिलेगा ।

शुभाकांक्षी

हृदयेश

डा० रमण सांडील्य

पो०-रागा द्वारा जीरो
अरूणाचल प्रदेश
791120
24-10-93

आप तो हमारे समाज की विभूति हैं । आपकी कृतियां मूल्यवान तथा ऐतिहासिक हैं ।

आपका

रमण शांडिल्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० कृष्णदेव कपिल; सेक्रेटरी जेनरल

ब्रा० इन्टरनेशनल, सोमनिवास, 537 कालका

(हरियाणा) 24-7-95

श्रद्धेय डा० शर्मा जी,

आपका पत्र दिनांक 19-7-95 क पत्र प्राप्तकर हर्ष है । आपका सम्मान सर्वत्र हो, हमारी शुभकामना है । वास्तव में आपका सम्मान करने से उस संस्था का मान एवं गौरव बढ़ता है । कोटिशः बधाई ।

आपका

डा० कपिल

८—८—९५

डा० अनिल कुमार आंजनेय

उजियार, जिला-बलिया, उ० प्र०

सम्मान्यवर शर्मा जी, सादरप्रणाम २७७५०१

विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ गाँधी नगर, ईशीपुर, जिला भागलपुर विद्यासागर (डी० लिट्) की उपाधि से आपको सम्मानित कर स्वयं सम्मानित अलंकृत हुआ है ।

यह समाचार जाना । मुदित हुआ ।

आपका

अनिल कुमार आंजनेय

प्राण मोहन 'प्राण'

महामन्त्री : द्विजेन्द्र राष्ट्रभाषा परिषद्, बौंसी, अंगिका संसद, बौंसी

मन्त्री : संस्कृति विहार, बौंसी, संवाददाता (प्रदीप) दैनिक, पटना हिन्दुस्तान

बौंसी

4-3-95

मान्यवर,

१२ फरवरी १९९५ ई०, को नई दिल्ली में अ. भा. सम्मेलन में आपके

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्मान प्राप्ति का समाचार सुनकर अपार हर्ष हो रहा है मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

आपका हीं

प्राण मोहन 'प्राण, बौंसी, बांका

आत्म गौरव के पल-दो-पल हमारे (पंडित सवलिया मिश्र फाउंडेशन, छपरा)

माननीय शिक्षा प्रभारी

डा० राधाकृष्ण शर्मा

को

अखिल भारतीय स्वामी सहजानन्द समाज सेवा पुरस्कार, नई दिल्ली

तू कदम-कदम बढ़ाए जा, गीत खुशी के गाएं जा,
ये जिन्दगी है कौम की, तू कौम पर लुटाएजा।

अविनाश नागदंश, संस्थापक सचिव

(पं० सवलिया मिश्र फाउंडेशन)

खानपुर (सारण), बिहार

२१-३-१९९५

डा० प्रभुनाथ सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग, बिहार वि. वि. मुजफ्फरपुर

13—7—95

आदरणीय गुरुवर

चरण स्पर्श

अपने के चिट्ठी मिलल। अपने भोजपुरी माटी के एगो अमूल्य निधि बानी। अपने पर हमनी का गौरव बा।

अपने के ही

प्रभुनाथ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग-जयपुर अधिवेशन

१८-१९ फरवरी, १९८५

राजेन्द्र शंकर भट्ट	गुरु कमलाकर कमल	डा० विष्णु चन्द्र पाठक
अध्यक्ष, राजस्थान हिन्दी	स्वागताध्यक्ष	स्वागत मंत्री
साहित्य सम्मेलन	गलतारोड, सूरजपोल गेट बाहर	सी-२६६, भाभा मार्ग
३ म्यूजीयम मार्ग, जयपुर	जयपुर	तिलकनगर जयपुर
फोन० ४८८९९	फोन० ४५२१५	फोन ४१०३७

सन्दर्भ : आपका पत्र

मान्यवर/महोदया,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अखिल भारतीय अधिवेशन में भाग लेने के लिए आप जयपुर पधार रहे हैं/रही हैं। अधिवेशन के स्थान और आपके आवास का पता निम्नांकित है :-

हिमांशु भवन, सवाई जयसिंह हाईवे, कलेक्ट्रेट रोड
मोतीमहल सिनेमा के पास, जंगलेश्वर महादेव के सामने, जयपुर (राजस्थान)

अधिवेशन का आरम्भ शनिवार, १८ फरवरी; १९८५ को प्रातः १० बजे होगा। हिमांशु भवन रेलवे स्टेशन जयपुर और हिन्दी कैम्प मुख्य बस स्टैंड से लगभग एक किलोमीटर है। रिक्शे दोनों जगह उपलब्ध रहते हैं। साइकिल रिक्शा लगभग ३ रुपये लेगा।

अधिवेशन के समय जयपुर में हल्की सर्दी रहेगी। एक स्वेटर अथवा दोशाले से काम चल जायेगा। बिस्तर का प्रबंध आवास में सभी के लिए किया जा रहा है। आप जयपुर किस समय पहुंचेंगे, यह बताने की कृपा करेंगे। आपके आगमन से हम सब प्रसन्न और कृतज्ञ अनुभव कर रहे हैं।

आपका पंजीयन क्रमांक है २६३। इसे अवश्य याद रखें।

सादर

निवेदन

डा० विष्णु चन्द्र पाठक

महामंत्री

राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीधर शास्त्री

प्रधानमंत्री

फोन : ६०६१६८

१८८, बहादुरगंज

(नीलकंठ होटल के पीछे)

इलाहाबाद-२११००३

२५-३-९५

मान्यवर

सादर प्रणाम

आपका १२ मार्च ९५ का पत्र मिला। आभार स्वीकार करें। आपकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य की धरोहर है। साहित्य इतिहास के क्षेत्र में आपके महत्वपूर्ण कार्यों के लिये मैं आपका अभिनन्दन करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपको स्वस्थ दीर्घ जीवन प्रदान करें। और साहित्य का निर्माण आपके हाथों से सम्पन्न हो सके।

सादर-आपका
श्रीधर शास्त्री
२५-३

प्रतिष्ठा में
डॉ० राधाकृष्ण शर्मा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूरभाष : २५५३०

भोजपुरी अकादमी

(बिहार सरकार द्वारा गठित स्वशासी संस्था)

पत्रांक 259 कार्यालय दिनांक—16-3-82

अध्यक्ष बोरिंग रोड, पटना-८००००१

श्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी निदेशक

श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय

सेवा में

डा० राधाकृष्ण शर्मा

मोहन नगर, छपरा

बिहार

महोदय,

अपने के पत्र मिलल। अपने का अपना बारे में प्रमाण का देवे के बा एगो इतिहासकार का रुप में अपने के मशहूर बानी। बहुते बढ़िया होखित अगर अपने भोजपुरी क्षेत्र के सांस्कृतिक क्षेत्र पर भोजपुरी भाषा में एगो पुस्तक लिख देतीं। एह खातिर अकादमी बहुते अनुगृहित होखित। अइसे अपने कवनो तरह के पांडुलिपि भेज सकत बानी। अकादमी अपना लेखक के प्रति तीन सौ शब्दन (एक पेज 9 पर पांच रुपया परिश्रमिक देले आ ओह पुस्तक के बिक्री पर १०% रायल्टी देले। इहे नियम एहिजा बा। इहे नियम बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादीओ के बा। उत्तर दिहल जाई।

आशा बा, सानंद होखब।

अपने के

हवलदार त्रिपाठी सहृदय

१६-३-८२

निदेशक

भोजपुरी अकादमी, पटना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूरभाष : २५५३०

भोजपुरी अकादमी

(बिहार सरकार द्वारा गठित स्वशासी संस्था)

पत्रांक-1620 कार्यालय दिनांक—19-5-82

अध्यक्ष बोरिंग रोड, पटना-८०००१

श्री सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी

निदेशक

श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय

सेवा में

डा० राधाकृष्ण शर्मा

मोहन नगर, छपरा

बिहार

महोदय,

अकादमी अपना ओजना के मोताबिक भोजपुरी के उत्तिम कोटि के कुछ ग्रथन के लिखवावल चाहऽतिया। एह संदर्भ में अकादमी की ओर से पनरह गो निरधारित विसयन पर ग्रंथ लिखबावे के जोजना बनल।

यह जोजना के अंतर्गत अकादमी अपने से 'भोजपुरी जनपदन के इतिहास' विषय पर ग्रंथ लिखावल चाहऽतिया। कृपया ग्रंथ लिखे खातिर आपन स्वीकृति भेजल जाउ आ सूचित कइल जाउ कि ई ग्रन्थ तइआर कइके कब तक अकादमी के अपने दे सकऽतानी। उत्तर जल्दी दिहल जाउ।

आसा बा, सानंद होखबि।

अपने के—

हवलदार त्रिपाठी १९-५-८२

निदेशक

भोजपुरी अकादमी

बोरिंग रोड, पटना -1

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० श्री रंजन सूरिदेव
पी० एन० सिन्हा कालोनी
भिखना पहारी, पटना-४

28-4-94

इसमें सन्देह नहीं कि आप एक अभिनन्दीय आप्त व्यक्तित्व की गरिमा का संवहन करते हैं और आपके चिन्तन के अमृताक्षर ततोऽधिक प्रामाणिक, प्रेरक और विश्वनीय है। इसलिए आपकी सारस्वत साधना का मूल्यांकन साग्रह अपेक्षित है। बिहार का साहित्य जगत रागद्वेष-दग्ध है। ऐसी स्थिति में आप जैसे साधक की जो भी आक्षरिक चर्चा होती है वह आपके प्राप्तम का क्षुद्रांश भी नहीं है।

सम्पादक : चिन्तन

वर्ष ४ अंक-४
जुलाई-अगस्त १९९४
जमशेदपुर

आपके लिखित साहित्य की विपुलता से आपके अगाध पांडित्य, सतत सारस्वत साधना, आपराजेय जीवट, हिन्दी-भक्ति एवं बहुआयामी व्यक्तित्व का अनुमान किया जा सकता है।

पृष्ठ २४

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० श्रीरंजन सूरिदेव
पी० एन० सिन्हा कालोनी
भिखना पहारी, पटना-८०००६

दिनांक ८-३-९५

सादर प्रणतयः

समादरणीय प्राज्ञवर शर्मा जी,

श्री जयप्रकाश रायजी द्वारा लिखित आपका संक्षिप्त जन्म और कर्म का परिचय प्राप्त कर आह्लादित हुआ। आप जैसे इतिहास पुरुष के लिए तो अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित भी होना चाहिए। आपने जो महार्घ सारस्वत सेवा की है, उसका समीचीन मूल्यांकन अभीशेष है। अवश्य ही यह परिचय औपचारिक तौर पर पुरस्कार समारोह में उपस्थित दर्शकों की जानकारी के लिए लिखा गया होगा। किन्तु है यह अतिशय उपयोगी। इसे आप साहित्य अकादमी दिल्ली को भी भेजिए। अकादमी ने 'हू जहू' के द्वितीय परिशोधित संस्करण के लिए साहित्यकारों के परिचय आमंत्रित किये हैं।

आशा है स्वस्थचेत हैं।

सद्भावश्रेयस्कामी

श्री रंजन सूरिदेव

श्री

३९ बारादारी
फ्लेट, जमशेदपुर
१२-३-९५

श्रद्धेय डा० राधाकृष्ण शर्माजी,

सविनय प्रणाम।

आपका कृपा पत्र पाकर आनंदित हूं। आप जैसे मनीषी का सम्मानित एवं पुरस्कृत होना, सूचित करता है कि अभी घोर कलियुग नहीं आया है। पात्रता, विद्वता, शील, सदाचार, धर्मनिष्ठा, ख्याति को आपके रूप में समादृत करके हम अपने समाज एवं नयी पीढ़ी का निर्माण करते हैं। रिपोर्ट चिंतन में छपेगी। पारिवारिक हिंसा की प्रति मुझे मिली है। मार्च अप्रैल में इसकी समीक्षा निकल जाएगी।

भवदीय

जगदीश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जे० पी० राय
रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग
स्वामी सहजानन्द महाविद्यालय,
गाजीपुर, (उ० प्र०)

साहित्यकार एवं इतिहासकार
डा० (प्रो०) राधाकृष्ण शर्मा
छपरा (बिहार)

जाने-माने साहित्यकार एवं इतिहासकार डा० (प्रो०) राधा कृष्ण शर्मा जो बिहार के सारण के अन्तर्गत बनियापुर थाना में पिठौरी ग्राम के मूल निवासी हैं। पटना विश्वविद्यालय से सन् १९४५ में एम० ए० (इतिहास) से उत्तीर्ण कर सन् १९४६ में डो० ए० वी० कालेज, सिवान में इतिहास के व्याख्याता पद पर नियुक्त हुये। विभिन्न पदों पर विभिन्न स्थानों पर रहने के बाद आपने सन् १९८२ में राजेन्द्र कालेज, छपरा के स्नाकोत्तर इतिहास विभाग में प्राध्यापक एवं अध्यक्ष के पद से अवकाश ग्रहण किया। छात्र जीवन में सन् १९४२ के क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के साथ-साथ अंग्रेजी शासन का आपने हरदम विरोध किया। आपने अपने ग्राम में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना करने के साथ ही लोक महाविद्यालय, बनियापुर —हाफिजपुर में प्राचार्य रहने के दौरान उक्त कालेज को २५ हजार रुपये का दान दिया। अध्ययन, अध्यापन, लेखन और समाजसेवा में आप गहरी रुचि लेते है। पत्र-पत्रिकाओं में भी आपका लेख प्रकाशित होता रहता है। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक, कुशल समीक्षक एवं पर्यटन में दिलचस्पी रखने वाले प्रो० शर्मा सादा जीवन-उच्च विचार वाले व्यक्ति हैं। आप शोधकर्त्ता एवं शोध निरीक्षक भी है और अखिल भारतीय इतिहास कांग्रेस, दिल्ली स्वामी सहजाननन्द हितकारी समाज, नई दिल्ली, व सर गणेश दत्त परिषद् पटना के सक्रिय सदस्य हैं। आपका सम्पर्क सूत्र हैं—

मोहन नगर, छपरा—८४१ ३०१ (बिहार) १९९३ ई०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० कृष्णदेव कपिल
सोम निवास,
कालका (हरियाणा)

आप एक महान विभूति हैं। आपकी बहुमुखी प्रतिभा और सम्पर्क सराहनीय है। आपकी क्षमता, अभिरूचि एवं कर्मठ रचनात्मक प्रयासों का सच्चे मन से सराहना करता हूं।

डा० कृष्णदेव कपिल
1-3-92

श्री गणेशाय नमः

प्रो० राधा कृष्ण शर्मा, प्राफेसर, इतिहास विभाग, राजेन्द्र कॉलेज, छपरा, के आवास पर पहुंचा। आदरणीय शर्मा जी से साक्षात्कार हुआ। आपकी पुस्तकों को तथा निबन्धों और शोधात्मक लेखों को देखकर अभिभूत हुआ। बहुत सी प्रसिद्ध संस्थाओं ने हिन्दी को इतिहास पर क ग्रन्थावली के सर्जन के लिए आपको पुरस्कृत और सम्मानित किया है। वस्तुतः आपने अपना जीवन अध्ययन-अध्यापन और लेखन के ब्रह्मयज्ञ में खपाया है। ऐसे कृती और श्रद्धेय विद्वान के बिदाई समारोह में राजेन्द्र कॉलेज, छपरा के छात्रों ने जो अभिनन्दन पत्रक समर्पित किया है, वह संक्षेप में आपके व्यक्तित्व के प्राण स्पद संस्पर्श को रेखांकित और रूपायित करता है।

ऐसे वरेण्य विद्वान को हमें पूरे आदर-भाव के साथ सम्मानित करते रहना होगा, तभी इस देश को संस्कृति सुरक्षि रहेगी।

नोटः—छपरा, सायंकाल ढाई बजे
दिनांक १३-११-९२

रामजी राय
श्री शारदा-सदन, कमसड़ी
पो०-असावर, गाजीपुर
१३—११—१९९२ ई० (उ० प्र०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नेहरू जयन्ती समारोह समिति

बोकारो इस्पात नगर

धनबाद (बिहार)

अध्यक्ष
चन्द्रकान्त चौधरी
संयोजक
रामजी तिवारी

सम्पर्क-सूत्र
रीतुडीह
बोकारो स्टील सिटी-११
धनबाद, बिहार

पत्रांक-ने०ज०स०स०/९/८०

दिनांक-२१-१०-८०

मान्यवर महोदय;

सादर नमस्कार

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी १४ नवम्बर को 'बाल दिवस' के अवसर पर इस बोकारो इस्पात नगरी में नेहरू जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर कुछ केन्द्रीय एवं बिहार सरकार के मंत्रिगण आमंत्रित किये जा रहे हैं।

समारोह के इस शुभ अवसर पर प्रतिमानित स्तर की एक स्मारिका भी हम प्रकाशित करने जा रहे हैं। इस स्मारिका के लिए नेहरू जी से संबंधित आपकी रचनायें सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे।

आशा के साथ,

सेवा में,
डा० राधाकृष्ण शर्मा
एम०ए०, पी एच०डी०
छपरा

आपका शुभेच्छु
रामजी तिवारी
संयोजक
नेहरू जयंती समारोह
बोकारो इस्पात नगर (धन०)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज

(SWAMI SAHAJANAND SARASWATI HITKARI SAMAJ)

(पंजीकृत आदर्श स्वयंसेवी संस्था)
(Regd. Ideal Voluntary Organisation)
109-P, आराम बाग, नयी दिल्ली-110055
(109-P, Aram Bagh, New Delhi-110055)

पत्रांक............ दिनांक-18-12-92

त्रिपुरारी राय
संस्थापक अध्यक्ष
दूरभाष । 523604

श्रद्धेय डा० शर्मा,

आपका का पत्र दिनांक 25.8-92 को प्राप्त हुआ। वर्ष 1991 में प्रकाशित पत्रिका भी मात्र दो प्रति ही उपलब्ध है। यहां भी लोग यदा-कदा पढ़ने आ जाते हैं। अतः उसे भेजने में असमर्थ हूं। वर्ष 1693 की स्मारिका प्रेस में है। समयानुसार आपको भेजने का प्रयास करूंगा।

वर्ष 1993 में दो स्मारिका प्रकाशित करने का विचार है। अतः आप से विनम्र प्रार्थना है कि 'सहजानन्द के सिद्धांत आज के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर या इससे सम्बंधित एक लेख अगर भेज सकें तो महान कृपा होगी।

शुभ कामनाओं के साथ

आपका
त्रिपुरारी राय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज

(SWAMI SAHAJANAND SARASWATI HITKARI SAMAJ)

(पंजीकृत आदर्श स्वयंसेवी संस्था)

(Regd. Ideal Voluntary Organisation)

109-P, आरामबाग, नयी दिल्ली-110055

(109-P, Aram Bagh, New Delhi-110055)

त्रिपुरारी राय

संस्थापक अध्यक्ष

दूरभाष : 523604

पत्रांक— दिनांक 23-1-93

श्रद्धेय शर्मा जी

सादर प्रणाम

आपका पत्र दिनांक 17-1-93 को प्राप्त हुआ। उक्त पत्र के साथ प्रेषित लेख भी मिला। यह लेख समाज की अगली स्मारिका में प्रकाशित होगा। समाज की चतुर्थ स्मारिका प्रकाशित हो चुकी है और इस पत्र के साथ संलग्न भेज रहा हूं।

समाज की आजीवन सदस्यता शुल्क 150=00 रु० है। फार्म भी संलग्न है। आप ऐसे विद्वान व्यक्तियों से हम अपेक्षा करते हैं कि स्मारिका के लिए समय-समय पर लेख भेजते रहें। इससे हम लोगों का मनोबल बढ़ता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रहेगा। इस स्मारिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर स्वामी जी को 'साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक' के रुप में चित्रित किया गया हैं। अगर आप कष्ट करें, एक लेख "स्वामीजी साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक" विषय पर स्वयं लिख कर या किसी अन्य विद्वान से लिखवाकर भेज दें तो बड़ी कृपा होगी। आशा है आपका सहयोग मिलता रहेगा।

नव वर्ष की शुभ कामनाओं के साथ,

आपका
त्रिपुरारी

....

सी० के० मिश्रा
भा० प्र० से०
समाहर्त्ता एवं जिला दण्डाधिकारी
छपरा, सारण

दिनांक ....

महोदय,

दिनांक 12-4-93 को 9 : 30 बजे पूर्वाह्न में जिला स्कूल छपरा में प्राथमिक शिक्षा के सुदृढ़ीकरण एवं बाल विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन आयुक्त, सारण प्रमंडल, छपरा के द्वारा किया गया है।

उक्त कार्यशाला में आप सादर आमंत्रित हैं।

सेवा में:—
प्रो० डा० राधाकृष्ण शर्मा
छपरा

(सी० के० मिश्रा)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रामेश्वर नाथ राय
एम०ए०,बी०एल०
सीनीयर ऐडभोकेट, पटना हाई कोर्ट

फोन । 262935
वेस्ट बोरींग कैनाल रोड
आनन्दपुरी))
पटना-1
26-1-94

महाशय,

सूचनार्थ निवेदन यह है कि आपके यहां एक पुरस्कार योजना है। यह पुरस्कार शिक्षित एवं चरित्रवान व्यक्ति को दिया जाता है। मेरा सुझाव है कि यह पुरस्कार एकबार डा० राधा कृष्ण शर्मा, पूर्व प्रध्यापक एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग (स्नाकोत्तर), राजेन्द्र कालेज, छपरा; बिहार [निवास ; मोहन नगर, छारा, बिहार] को प्रदान किया जाय। वे आदर्श प्रध्यापक, समाजसेवक, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक और सरस्वती के उपासक हैं। वे स्वतन्त्रता सेनानी और प्रसिद्ध लेखक भी हैं। वे विद्वान और चिंतक भी हैं।

उनके लेखों और पुस्तकों से उनके उत्तम विचारों और चरित्र के बारे में अच्छी जानकारी मिल सकेगी। वे स्वय चरित्रवान तो हैं ही वे अच्छे चरित्र निर्माण के लिए प्रेरणास्रोत भी हैं। उन्हें कई मचों से सम्मानित भी किया गया है।

वे लगभग 75 वर्ष के हो रहे हैं। वे पक्के शाकाहारो हैं। उनका सारा जीवन अध्यन-अध्यापन व समाज सेवा में बीता है। वे अभी भी अध्ययन एवं लेखन कार्य में व्यस्त रहते हैं। उन्हें किसी प्रकार की नशा नहीं है। वे सादा जीवन, उच्चविचार के प्रतीक हैं।

जयतुलसी फाउडेशन
नई दिल्ली,

भवदीय,
रामेश्वर नाथ राय
25-1-1995

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Ph : 523604

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज

(Swami Sahajanand SaRaswati Hitkari Samaj

(पंजीकृत आदर्श स्वयंसेवी संस्था

(Regd. Ideal Voluntary Organisation)

109-P, आराम बाग, नयी दिल्ल-110055

वीरेन्द्र कुमार राय (109-P, Aram Bagh, New Delhi-110055

महासचिव

पत्रांक-समाज 1-94 दिनांक 2-4-94

श्रदेय डा० शर्मा,

स्वामी सहजानन्द सरस्वती को 105 वीं जयन्ती दिनाक 10-3-94 (महाशिवरात्रि) को समाज के तत्वाधान में आर० के० पुरम, नई दिल्ली में मनायो गयो। इस शुभ दिवस पर समाज की कार्यकारिणी तथा सरक्षक मडल का निर्वाचन/मनोनयन भी सम्पन्न हुआ।

आपको सर्वसम्मति से समाज के संरक्षक मण्डल का सदस्य मनोनीत किया गया। कृपया, हमारी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें आशा है आपकी छत्रछाया में समाज अपने उद्देश्यों को रचमात्मक दिशा दे सकेगा।

सादर,

डा० राधाकृष्ण शर्मा
मोहन नगर, छपरा
(बिहार)

आपका
बिरेन्द्र कुमार राय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज

(Swami Sahajanand SaRaswati Hitkari Samaj

(पंजीकृत आदर्श स्वयंसेवी संस्था

(Regd. Ideal Voluntary Organisation)

109-P, आराम बाग, नयी दिल्ल-110055

(109-P, Aram Bagh, New Delhi-110055

त्रिपुरारी राय
संस्थापक अध्यक्ष

दिनांक 17-4-94

परम श्रद्धेय डा० शर्मा

सादर प्रणाम

स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज के संरक्षक मण्डल का सदस्य मनोनीत होने पर मेरी बधाई व शुभ कामना स्वीकार करें। मुझे विश्वास है कि आपके दिशा-निर्देशन में समाज उत्तरोत्तर प्रगति करता रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ

सादर

डा० राधा कृष्ण शर्मा
मोहन नगर, छपरा
बिहार

आपका
त्रिपुरारी राय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ग्रामीण क्षेत्रों की सेवा के सम्बन्ध में पंचायत मुखिया का एक प्रमाण पत्र

डा० (प्रो०) राधकृष्ण शर्मा एम० ए०, पी एच० डी० ग्राम पिठौरी, थाना बनियापुर, जिला सारण (बिहार) के निवासो हैं। इन्होंने २ अक्टूबर १९४३ ई० में इस ग्राम में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की है। यह पुस्तकालय बिहार सरकार द्वारा निबन्धित पुस्तकालयों की सूची में है। पुस्तकालय में वयस्क शिक्षा केन्द्र का भी संचालन होता है। इस पुस्तकालय में बिहार के प्रथम मुख्य मन्त्री डा० श्री कृष्ण सिंह तथा कुछ अन्य बड़े-बड़े व्यक्तियों का शुभागमन हो चुका है।

पुस्तकालय के अलावा शर्मा जी ने ग्राम में एक उच्च विद्यालय की स्थापना के लिए भी साढ़े छत्र कट्ठा जमोन दी है जिसको कोमत लगभग पचास हजार रुपये होंगे।

शर्माजी ने अपने थाना के एक डीग्री कॉलेज में भी पचीस हजार रुपये मूल्य का पुस्तकालय स्थापित करने के लिए अपनी सहमती दी है।

शर्मा जी का दृष्टिकोण मानवतावादी है! ये ग्रामीण समाज नें समानता सहिष्णुता और सद्भावना के प्रबल समर्थक हैं। ये राष्ट्र भाषा हिन्दी के भी बड़े प्रेमी हैं। ग्राम में इन्हें बहुत लोक-प्रियता प्राप्त है।

राजकिशोर सिंह
मुखिया
पं० राज पिरौटा खास सारण
५-१-९१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'

हृदयेश-पथ, नखास
गाजीपुर (उ० प्रदेश)
12-10-87

प्रिय बन्धु,

सप्रेम नमस्कार

आपका 6-10 का पत्र। संलग्न-आपकी रचनाओं की विवरणात्मक सूची, सूची देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुयी। कभी महर्षि व्यास जी का महाभारत पढ़ने में पूरे ६ महिने का समय लगा था। मुझे अपनी वर्तमान क्षमता देखते हुये ऐसा लगता है कि आपको पढ़ने में भी इससे कम समय नहीं लगेगा। आपकी बहुचर्चित कृति दुनिया की कहानी यदि प्रकाशक के पास उपलब्ध हो तो निर्देश दे दें कि एक प्रति वी० पी द्वारा मेरे पास भेज दें, छुड़ा लूँगा। धीरे अन्य कृतियों को पढ़ने का भी प्रयास करूँगा।

समाचार लेते-देते रहेंगे तो सुख मिलेगा।
परिवार के सदस्यों को अभिवादन।

शुभाकांक्षी
हृदयेश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इंजी० लुनेश कुमार विश्वकर्मा, सुधांशु

प्रमुख सम्पादक : हिन्दी साहित्यार्चना (द्वि० मा०)

सदस्य : संयुक्त हिन्दी सलाहकार समिति (भारत सरकार)

एम/बी–49 ए रेलवे आदर्श कालोनी

मानिकपुर (बाँदा)

210208

14 सितम्बर 1991

आदरणीय श्री शर्माजी,

सादर नमस्कार

आपका 7-9-91 का कृपा पत्र एवं रचना (लेख) प्राप्त हुए। इस स्नेह एव सहयोग के लिए आभारी हूं।

आपने जानना चाहा है कि हमे आपका पता किस सन्दर्भ से प्राप्त हुआ। उत्तर में मैं स्वयं प्रश्न करूंगा कि क्या आप ऐसे व्यक्ति, विद्वान हैं जो छुपे रह सकें? किसी सन्दर्भ से ही मुझे आपका नाम व पता प्राप्त हुआ। आप जैसे कर्मठ विद्वान व मातृभाषा सेवी का सन्दर्भ मिलना मुश्किल नहीं है।

आपका

लु० कु० विश्वकर्मा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजेन्द्र शंकर भट्ट
अध्यक्ष
राजस्थान हिन्दी
साहित्य सम्मेलन

Gram : Pashan
Fax : (0141) 371146
Phone: (0141) 48899
स्फटिक
3, म्यूजियम मार्ग
जयपुर 302 004 (भारत)

दिनांक : 31-8-95

प्रिय श्री शर्मा जी,

आपका ८ अगस्त का पत्र, और संलग्न सामग्री दो लिफाफों में प्राप्त हुई। मैं इसे ध्यानपूर्वक देख गया हूं और आपकी उपलब्धियों को भारतीय भाषा और ज्ञान के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता हूं।

आपकी पुस्तकें भी मिल गयी थीं उन्हें जितना समय दिया जाना चाहिए, उतना इन दिनों में निकाल नहीं सका। इन्हें देखकर फिर से आपको लिखूंगा।

जयपुर का आयोजन आपको अच्छा लगा, यह हम सबके लिए संतोष की बात है।

मेरा अनुरोध है कि आप एक विस्तृत संस्मरण तैयार करके भिजवायें। अधिवेशन के विवरण के साथ इसे यहाँ से प्रकाशित किया जायेगा।

आपकी वेगशील अभिवृद्धि तथा सतत उन्नति के लिए मेरी हार्दिक मंगलकामनाएं स्वीकार करें।

सस्नेह,

आपका
(राजेन्द्र शंकर भट्ट)

श्री डा० राधा कृष्ण शर्मा,
उर्मिला कृष्ण भवन,
मोहन नगर, छपरा (बिहार) ८४१३०१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० प्रभुनारायण विद्यार्थी
एम०ए०, बी०एल०, पीएच०डी० (राँची)
डिप्लोमा इन ट्रेनिंग मैनेजमेंट (इंगलैंड)
अपर समाहर्त्ता, मधेपुरा

मधेपुरा निवास 2047
राँची निवास 201727

दिनांक 23-10-95

श्रद्धेयवर डा० शर्मा जी,

दिनांक 12-10-95 का आपका पत्र मिला। साथ ही 'सभ्यता एवं संस्कृति' पर निबंध और आपकी पुस्तकों की सूची भी।

आपकी सारी प्रकाशित कृतियों से अवगत हुआ। आपकी कृतियों की इतनी लम्बी सूची है, जानकारी नहीं थी। आप मौन साधक रूप में सदैव साहित्य की रचना में लगे रहे हैं और समाज को अपने पुष्कल साहित्य से लाभान्वित किया है।

साहित्य और समाज को आपका अवदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका ही अभिन्न
प्र० ना० विद्यार्थी

★

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ दुर्गे शरणम्

संजय सरस्वती

दूरभाष : २६०६५०
उर्मिला निवास
७०, उत्तरी गांधी नगर
पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड
पटना-८०००01
(भारत)

९-२-९५

परम आदरणीय प्रो० साहब,

सादर प्रणाम,

आपके दो-दो पत्र मिले हैं। आपको मैं ईश्वर की तरह मानता हूं आप हमारे गांव के श्रेष्ठतम् व्यक्तित्व हैं एवं आप पर बिहार एवं भारत को नाज हैं, आप देश के गौरव हैं। अब आप जैसा विद्वत व्यक्तित्व पिठौरी शायद ही कभी दे पाए। आप कुलपति बनें यह मेरी सदिच्छा है पर आप प्रयत्न ही नहीं करते ? मैं इधर पटने मे नहीं रहूंगा। चुनाव बाद भेंट होगी या छपरा आया तो दर्शन करुंगा। इस बीच आप पटने आयें तो जरुर पधारें, चरण धूलि दें। अगर रहा तो भेंट आप से सौभाग्य की बात है।

मेरे लायक कोई भी सेवा पटने में हो जरुर आदेश देगें। आप मेरे अभिभावक की तरह हैं, परम पूज्य एवं आदरणीय है। आप सूबे सारण एव गांव की शोभा हैं एक सरल एवं संत हृदय महान व्यक्ति।

सादर प्रणाम पुनः स्वीकारें

भवदीय
संजय सरस्वती

डा० राधा कृष्ण शर्मा जी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पटना २२-१२-१

पूज्य सर;

सादर चरणस्पर्श

नये साल का आगमन नजदीक है इसलिए अपने पूज्य सर को याद करना मेरे लि निहायत कर्त्तव्य है। जिंदगी की दौड़ में कई लोगों का आना-जाना लगा ही रहता है मग कुछ ऐसे व्यक्तित्व का मिलन होता है जिसके लिए दिल और दिमाग हमेशा व्यग्र रहता है कोशिशें कभी असफल नहीं होतीं लेकिन शिखर पर पहुँचे कर्मयोगी का मार्ग दर्श एक राही के लिए कितना जरुरी है भला आप से अधिक कौन समझ सकता है। इ आशा के साथ अपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए आप से एक अर्ज कर रहा हूं इस उम्मी के साथ कि आपका प्रति उत्तर मेरे लिए सर माथे होगा।

आपका शुभचिंतक
नरेन्द्र

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन

रजत जयन्ती समारोह

परसागढ़ उच्च विद्यालय, राहुलनगर
परसागढ़ एकमा, छपरा-८४१२२० (बिहार)

तिथि २२-८-८४

पत्रांक । २८/८४

सेवा में

डा० राधाकृष्ण शर्मा
भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा

मान्यवर,

सहर्ष सूचित करना है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनी अखण्ड ज्ञान-साधना से अभिषिक्त करने वाले अप्रतिम मनीषी महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन की प्रेरणा-भूमि परसागढ़, सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन का त्रिदिवसीय रजत-जयन्ति-समारोह नवम्बर १६, १७, एवं १८ को आयोजित है।

इस साहित्यिक अनुष्ठान में आपसे सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

स्वागताध्यक्ष
डा० रमाकांत पांडेय

स्वागत मन्त्री
ब्रजेश कुमार रमण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सारण जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन

मुख्यालय : छपरा (सारण)

पत्रांक—१३/८४ दिनांक २३-८-८४

सेवा में

डा० राधाकृष्ण शर्मा,
भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग
राजेन्द्र महाविद्यालय,
छपरा

मान्यवर,

सम्मेलन का २५ वां अधिवेशन एव रजत-जयंती समारोह महापंडित राहुल सांकृत्यायन की प्रेरणा-भूमि परसागढ़ में नवम्बर १६ से नवम्बर १८ तक आयोजित है, उक्त अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन की योजना है जो आए जैसे सुधी इतिहास ध्येता और शिक्षक के रचनात्मक सहयोग के बिना अपेक्षित मूल्यवत्ता प्राप्त नहीं कर सकती।

अत: कार्यकारिणी के आदेशानुसार अनुमोदित विषय-

"स्वातंत्रय संग्राम में सारण का योगदान" पर आपसे निबंध आमन्त्रित कर रहा हूं. कृपया २० सितम्बर १९८४ तक निबंध भेजकर हमें कृतार्थ करेंगे।

प्रकाशन-व्यवस्था की दृस्टि से समय सीमा इससे अधिक बढ़ाना सभव नहीं दीखता, कृपया स्वीकृति-सूचना प्रेषित करेंगे।

पता
रेलवे गोदाम रोड,
भगवान बाजार, छपरा
पो० छपरा (सारण)

भवन्निष्ठ
हरिकिशोर पाण्डेय
महामंत्री
सारण जिला हि०सा० सम्मेलन

नोट।— स्वाधीनता आंदोलन में सारण जिले का योगदान सितम्बर के अंतिम सप्ताह में भेज दिया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi.

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बिहार केसरी डा० श्रीकृष्ण सिंह जन्म-शताब्दी(१९८७) समारोह समिति

LPS/SKS/BC/30/86

श्रीकृष्ण ज्ञानमन्दिर, छज्जूबाग, पटना

दिनांक ८-१-८६

"सुधर्मा" बोरिंग रोड, पटना

ललितेश्वर प्रसाद शाही, एम० पी०
अध्यक्ष,

प्रिय शर्माजी,

आपको यह सूचित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है कि आधुनिक भारत के एक प्रमुख राष्ट्रीय नेता एवं बिहार के सर्व प्रथम लोकप्रिय मुख्यमंत्री, बिहार-केसरी डा० श्री कृष्ण सिंह का जन्मशती महोत्सव २१ अक्टूबर १९८६ से अक्टूबर, १९८७ तक की एक वर्ष की अवधि में, समारोह के साथ मनाया जायेगा। उपर्युक्त ऐतिहासिक अवसर पर, डा० श्री कृष्ण सिंह की पुण्यस्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने के अभिप्राय से एक विशाल स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है। उक्त स्मृति ग्रन्थ में, बिहार केसरी डा० श्री श्री कृष्ण सिंह के त्याग और तपस्यापूर्ण जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित प्रामाणिक लेखों, वृतांतों, संस्मरणों एवं छाया चित्रों के अतिरिक्त अन्यान्य महत्वपूर्ण अभिलेखों को भी समाविष्ट किया जायेगा। चूं कि बिहार केसरी जी ने अपनी कोई आत्मकथा नहीं लिखी थी, इसलिए उनके सुदीर्घ लोकजीवन के सम्बन्ध में आप जो भी लेख अथवा संस्मरण लिखेंगे, उसके आधार पर हमारे राष्ट्रीय इतिहास के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

अतएव, आपसे साग्रह अनुरोध है कि प्रस्तावित बिहार-केसरी डा० श्री कृष्ण सिंह जन्मशती स्मृति-ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ अपनी रचना (सम्बंधित छाया-चित्रों तथा अन्य अभिलेखों की फोटो-प्रतियों के साथ) १० मार्च १९-८६ तक भेजकर हमें अनुगृहित करें।

भवदीय

ललितेश्वर प्रसाद शाही

सेवा में,
प्रो० राधाकृष्ण शर्मा
छपरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Bihar Kesari Dr. S. K. Sinha Centenary (1987) Celebration Committee.

Shrikrishna Gyan Mandir, Chhjjaubagh. Patna

Date २३-१०-८६

ललितेश्वर प्रसाद शाही, सांसद ।

२ ऐ० बी० पुराना किला रोड,
नई दिल्ली ।

प्रिय शर्मा जी,

आपका पत्र दिनांक २५-८-८६ का प्राप्त हुआ । छोटी पुस्तकें भी मिलीं । धन्यवाद । छपरा बल्कि सारण जिला में श्री कृष्ण सिंह शताब्दी मनाने का काम कृपया आगे बढ़ाईये ।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका
ललितेश्वर प्रसाद शाही

डा० राध कृष्ण शर्मा,
मोहन नगर, छपरा (सारण)
बिहार ।

नोट- स्कूल विभाग के अधिकारियों से मिलकर हर स्कूल में मनाया जाय ऐसा प्रबंध करना चाहिये अगले वर्ष में ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'अस्मान बृहस्पतेऽसि राष्ट्राय वर्धय'

राष्ट्रीय सेवा योजना

यदुनन्दन महाविद्यालय दिघवारा, सारण

(बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर)

राष्ट्रीय सेवा योजना

NATIONAL SERVICE SCHEME

प्रो० रामानन्द शर्मा
कार्यक्रम पदाधिकारी
अध्यक्ष, इतिहास विभाग

पत्रांक.................

दिनांक.................

इतिहास के यशस्वी विद्वान, महान लेखक, ग्रन्थ पुरस्कार विजेता, सच्चा समाज सेवी, शिक्षण संस्थाओ में गहरी अभिरूचि रखने वाले, आदर्श वक्ता, पूर्व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, राजेन्द्र कॉलेज छपरा के डा० राधा कृष्ण शर्मा ने युवा सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर दिनांक 19-1-88 को विवेकानन्द पर अपना व्याख्यान दिया तथा विवेकानन्द के जीवन और दर्शन की सच्ची तस्वीर स्वयंसेवकों के सम्मुख प्रस्तुत की। डा० शर्मा ने छात्रों एवं स्वयंसेवको से स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों पर चलने की अपील की। उनके ओजपूर्ण भाषण से श्रोतागण काफी लाभान्वित हुए।

रामानन्द शर्मा

१०-९-९१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बिहार के पहले मुख्य मंत्री माननीय डा० श्री कृष्ण सिंह

और

नेपाल के यातायात मन्त्री माननीय श्री भद्रकाली मिश्र का शुभागमन

पिठौरी सार्वजनिक पुस्तकालय

के

द्वितीय वार्षिकोत्सव

के अवसर पर

स्वागताध्यक्ष

प्रो० राधाकृष्ण शर्मा

का

अभिभाषण

५ अप्रैल १९५२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परम सम्माननीय सभापति जी, भाइयों और बहनों;

अपने पुस्तकालय के इस द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं अपनी ओर से तथा अपने सहयोगियों एवं ग्रामवासियों की ओर से इस विशाल जन समूह के बीच अपने सभी आदरणीय अतिथियों का स्वागत करता हूं। आप हमें आशीष दें कि हमारी संस्था जनता-जर्नादन की सेवा शिक्षाप्रसार जैसे पुनीत कार्य के द्वारा करने में उत्तरोत्तर उन्नति करती जाय।

भारत जैसे देश में—जहां अधिकांश किसान ही हैं. पुस्तकालयों का अत्यधिक महत्व है। सच पूछा जाय तो हमारे देश के लिये पुस्तकालय की उपयोगिता एक विद्यालय से कहीं अधिक है! असल में पुस्तकालय विश्वविद्यालय है-यह हमारे समाज का वह विश्वविद्यालय है जहां प्रत्यक्ष रुप से अध्यापक तो एक भी नहीं रहते, लेकिन विद्यार्थियों के रुप में उसके अनेक पाठक होते हैं। अध्यापक का स्थान पुस्तक के रचियता स्वयं ही ग्रहण करते हैं। इसी कारण यदि पुस्तकों का स्वाध्याय किया जाय तो किसी अध्यापक के माध्यम की आवश्यकता नहीं होती। पुस्तक बच्चों के लिये मनोरंजन की सामग्री है, युवकों के लिये ज्ञानप्राप्ति का साधन है और बूढ़ों के लिये एक अनुभवी तथा अभ्रान्त मित्र है। जीवन में पुस्तकों का महत्व कितना है, यह हम सरलतासे नहीं समझ पाते। इसका कारण यह है कि जीवन को समझने की हमने कभी कोशिश हीं नहीं की। यदि हम जीवन को समझ पाते तो पुस्तकों की उपयोगिता अनायास हीं हमारी समझ में आ जाती। असल बात है कि यह हमारी सबसे बड़ी कमजोरी रही हैं कि हम दूसरों के अवगुणों को ही सदा देखते हैं किन्तु अपनी त्रुटियों पर ध्यान नहीं देते। हममें हौसले तो बहुत है किन्तु अपनी त्रुटियों पर ध्यान नहीं देते। हममें हौसले तो बहुत हैं किन्तु साधना की कमी है। हम नाम की धूम तो चाहते किन्तु काम की ओर से मुख मोड़ लेते हैं। हम बनना तो बहुत चाहते हैं किन्तु करना कुछ नहीं। यही कारण है कि हम अपने जीवन में बहुत कुछ करने की अभिलाषा रखकर भी कुछ नहीं कर पाते। इसकी भी बजह यही है कि हम अपने जीवन को समझ नहीं

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाते। अपनी आंखो पर हम पर्दा डालते हैं, अपनी बुद्धि को प्रवंचित करते हैं और अपने को महान बनने का दम भरते हैं। लेकिन सत्य पर कल्पना की कलई कभी भले ही चढ़ जाय, कल्पना के महल कभी सत्य नहीं होते। अतः आवश्यकता है हमें अपने जीवन को समझने की, इसे परखने की, और जीवन को परखने के लिए आवश्यक है कि हम स्वाध्याय करें। स्वाध्याय तप है। हां पुस्तकों का अध्ययन अनुशीलन और मनन करना भी एक सच्ची तपस्या ही है। और ऐसा करने के वाद ही हम अपने को समझ सकते हैं और अभीष्ट मार्ग पर निर्भीक होकर अग्रसर हो सकते हैं तथा मानसिक स्तर को ऊँचा उठाकर अपने निर्दिष्ट लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं। अतः अध्ययन ही उन्नति की कुंजी है, उत्थान का रहस्य है। पर हमारा देश अभी उस स्तर पर नहीं पहूंच सका है ताकि सभी व्यक्ति को विद्यालमों में अध्ययन करानेका मौका मिले। इस स्थिति में पुस्तकालयों में ही वह स्वाध्याय के द्वारा अपने ज्ञानचक्षु खोल सकता है तथा अपने मस्तिष्क को विकसित कर सकता है। मैं पुस्तकालय को आत्म सस्कार का सर्वोतम साधन समझता हूं।

आत्म संस्कार के सिवा यह मानव समाज की जागृति और समाज हित का सूत्रपात करता है। इससे अशिक्षा-अधकार का निराकरण होता है, मनुष्य अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों को जानने लगता है। पुस्तकालय समाज का गुरुकुल हैं। समाज के भिन्न-भिन्न अगों में समानता का भाव पैदा करने और जनसमुदाय में देश प्रेम एवं स्वतन्त्रता का भाव भरने के लिए पुस्तकालय से बढ़कर दूसरा उत्कृष्ट साधन नहींहै। राष्ट्र-निर्माण एव राष्ट्रोत्थान की यह आधार शिला है।

इतनी अधिक उपयोगिता होने पर भी हमारे देश में पुस्तकालयों का अभाव है। गांव-गांव में इसकी आवश्यकता है पर हम अभी तक इस ओर पर्याप्त प्रयत्नशील नहीं दिखलायी पड़ते हैं। यह हमारी सबसे बड़ी त्रुटि है और इसे दूर करना हम सभी का कर्त्तव्य है।

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपनी इस त्रुटि को दूर करने का प्रयास हमने किया है जिसका परिणाम आपके सामने है ! यह हमारा सौभाग्य है कि देहात के एक उपेक्षित कोने में स्थित एक पुस्तकालय के तत्वाधान में हम आप सभी आदरणीय अतिथियों का स्वागत करने जा रहे हैं। हमारा यह प्रयास कम गौरवपूर्ण नहीं। वास्तव में आज शनिवार ५ अप्रैल १९५२ का दिन पिठौरी ग्राम के इतिहास में एक विशेष महत्व का है। केवल इस ग्राम के इतिहास में ही नहीं, बनियापुर थाने के इतिहास में यह दिन स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। आज हमारे बीच एक ऐसे दिव्य महापुरुष उपस्थित हैं जिनका स्वागत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। ये बिहार के गौरव हैं, हमारे ताज हैं जिन पर हमें बहुत नाज है। यह मेरा सौभाग्य है। मेरा ही नहीं, सैकड़ों और सहस्त्रों नर-नारियों का आज सौभाग्य-सूर्य उदय हुआ है जिससे इस तेजस्वी त्यागी एवं तपस्वी वयोवृद्ध का दर्शन हो सका है। आपलोगों ने सुना और पढ़ा है कि प्राचीन काल में ब्रज के निवासी श्री कृष्ण के विरह में बहुत व्यग्र थे और उनके दर्शन के लिऐ लालायित थे। क्षण-क्षण समय का काटना उनके लिए कठिन होरहा था और उनके प्रेम की ज्वाला में उधव की ज्ञान-गरिमा की पोथी भी जल गई। यही हालत इस इलाके के लोगों की थी। सभी नर नारी, बालवृद्ध और युवा अपने श्री कृष्ण के दर्शन के लिए उतावले हो रहे थे। अब तक उनका निराकार रुप हीं यहां के लोगों के हृदय में परिव्याप्त था। किन्तु हम इतने से ही सन्तुष्ट होने को नहीं थे, हमतो उनका साकार रुप देखकर अपनी आंखों को तृप्ति करना चाहते थे—व्यग्र हृदय को शान्त करना चाहते थे।

आप जानते हैं कि भगवान भी भक्तों के प्रेम के वशीभूत हो ही जाते हैं। हमारे श्री कृष्ण ने भी हम भक्तों के हृदयतंत्री की आवाज सुनी और अपना साकार रुप दिखलाकर हम सबों को कृतार्थ किया। यह सूचित करता है कि उनका भी हमारे प्रति कितना प्रेम है। आज महीनों से कार्य व्यस्त है एक एक मिनट चैन नहीं। अनेक समस्यायें उपस्थित हैं, नयी सरकार बनाने का प्रश्न है, फिर भी इतने दूर देहात में बीहड़ रास्ते को पार करते हुए आपने हमें अपना दर्शन दिया है। हम इनके गुणों का बखान करने योग्य नहीं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इनका जीवन रहस्यमय है। आप हमारे सबसे बड़े स्वामी हैं साथहीं उच्च कोटि के सेवक हैं। वृद्ध होकर भी आपमें जवानों का उमंग और उत्साह है। आप एक कुशल सैनिक हैं, साथही अहिंसा के परम पुजारी हैं। लड़ने में जितना ही कटिबद्ध हैं अहिंसा के सिद्धांत का पालन करने में इतना ही नम्र हैं। आप शासक हैं किन्तु निरंकुश नहीं बल्कि शासित वर्ग के शुभचिंतक हैं। आप राजनीतिक नेता हैं साथही धुरंधर विद्वान एवं कुशल लेखक है। पुस्तक और पुस्तकालयों में आपकी विशेष अभिरुचि रही है और अभी भी अवकाश मिलने पर आप स्वाध्याय में निरत रहते हैं। वक्ता की दृष्टि से तो आप वेजोड़ हैं हीं। इसी कला ने तो आपको बिहार केशरी की पदवी से विभूषित किया है। आपके त्याग और तपस्या की भावना दूसरों के लिए अनुकरणीय है। जवानी का अधिकांश भाग जेल के शिकंजे में बीता है। प्रथम कांग्रेस मंत्रीमंडल के ही समय एक ही साल बाद (१९३८ ई०] राजनीतिक कैदियों के छोड़ने के प्रश्न पर जब अंग्रेज गवर्नर से मतभेद हुआ तो आपने शीघ्र ही पद त्याग की धमकी देकर उसके श्वेत मुख को काला कर दिया।

ऐसे विलक्षण पुरुष का स्वागत करना हमारे लिए कितना कठिन है यह कहने की बात नहीं। हम आपका स्वागत कहां तक कर सकते हैं। हमारे पास श्रद्धा है, साधन नहीं, दिल है, द्रव्य नहीं, मन है परन्तु महल नहीं। अतः हमसे त्रुटियों का होना स्वाभाविक है और आशा है कि आप हमारे प्रेम को अपने साथ ले जायेंगे और हमारी त्रुटियों को यहीं तक रहने देंगे आप हमारे हैं, हम आपके हैं।

मैं नेपाल के यातायात मन्त्री माननीय भद्रकाली मिश्र तथा अपने लोकप्रिय जन-प्रतिनिधि श्री विश्वनाथ मिश्र का भी अपनी ओर से, अपने ग्राम बासियों की ओर से तथा पुस्तकालय के सदस्यों की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूँ।

अधिक हम क्या कहें ? समय का अभाव है। अपने आह्लादित हृदय से निकले हुए इन टूटे फूटे शब्दों के साथ मैं अपने परम माननीय अतिथियों तथा उपस्थित अन्य सभी बहनों और भाइयों का फिर समवेत स्वागत करता हू।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के एक पत्र की प्रति

Government House
New Delhi
20-2-50

श्री राधाकृष्ण जी,

आपका भेजा शुभ कामना का पत्र जिसे आपने अपनी ओर से, पिठौरी ग्राम वासियों की ओर से तथा पिठौरी पुस्तकालय की ओर से भेजा है मुझे मिला है। इसके लिए आप कृपा कर मेरा धन्यवाद स्वयं स्वीकार करें तथा पिठौरी पुस्तकालय के सदस्यों तथा पिठौरो ग्राम वासियों को पहुँचा दें।

आपका
राजेन्द्र प्रसाद

प्रोफेसर राधाकृष्ण शर्मा, एम० ए०
राजेन्द्र कॉलेज,
छपरा.
जिला-सारण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२ अक्टूबर १९४३ ई० को मेरे ग्राम में एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना हुई। यह पुस्तकालय सारण जिला पुस्तकालय से स्वीकृत और बिहार सरकार द्वारा निबन्धित है। इस सार्वजनिक पुस्तकालय के सम्बन्ध में चार प्रमुख सम्मतियाँ

श्री राधकृष्ण सार्व पुस्तकालय के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर मुझे भी पिठौरी जाने का अवसर मिला। दूरदेहात में ऐसी उपयोगी और सुसंगठित संस्था को देखकर आश्चर्य हुआ—पुतकालय की पुस्तकों की सूची, उसका प्रबन्ध, समाचार पत्रों की संख्या इत्यादि को देखने पर विश्वास हुआ कि यहां कें आसपास के लोगों के लिये यह संस्था अत्यन्त उपयोगी है। बिहार सरकार ने भी पुस्तकालयों के सम्बन्ध में अपनी एक नीति सहायता के लिये बना रखी है। मूझे विश्वास है कि ऐसी उपयोगी संस्था को उचित सहायता मिलेगी। इस संस्या के संस्थापक प्रो० राधाकृष्ण जी को सारा श्रेय इस पुस्तकालय को चलाने के लिये है हो परन्तु इनके सहयोगी भी धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं इस संस्था की सफलता के लिये सदैव प्रयत्नशील रहूंगा।

विश्वनाथ मिश्र
(अधिवक्ता)

छपरा
१६-४-५०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

I visited Radha Krishna Librray at Pithauri on 2 nd April 1950 in connection with the first anniversary of the institution. It was pleasure to find that a village library is housed in such an excellent builbing and well furnished with books. It speaks well of enthusiasm for the pursuit of kdowledge on the part of the rural people that such a Lidrary has been started in the interior of the cunotry. The Library seems to be very popular and is serving a real need of the place and I congratulate the workers on their success so far achieved. I hope the Library will continue to fulfil its functon of dissєminating knowlebge to an ever widening circle of readers and wish it all success.

M. K. Chatteriji

2—6—50

District Magistrate

Saran

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैंने आज बिहार केसरी डा० श्रीकृष्ण सिंह जी, मुख्य मन्त्री, बिहार, के साथ राधाकृष्ण सार्वजनिक पुस्तकालय, पिठौरी सारण के द्वितीय वार्षिकोत्सव में भाग लिया। यह समारोह श्रीबाबू की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। पुस्तकालय में पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की संख्या पर्याप्त थी। पुस्तकालय भवन एवं उसके भविष्य की रुपरेखा को देखकर अत्यन्त सन्तोष हुआ। देहाती क्षेतों में ऐसे पुस्तकालय की आवश्यकता एवं महत्व स्वयंसिद्ध है। पुस्तकालय के संचालकों का प्रयास सराहनीय है तथा वे धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसे पुस्तकालयों को सरकार से आर्थिक सहायता उदारतापूर्वक मिलनी चाहिए। मैं पुस्तकालय की उन्नति एवं विकास की शुभकामना करता हूँ।

भद्रकाली मिश्र

५-४-१९५२

(पूर्व यातायात एवं संचार मन्त्री
नेपाल सरकार)

दिनांक १२-८-५९

स्थानीय विद्यालय को देखने क्रम में इस पुस्तकालय को देखने का मौका मिला। यह पुस्तकालय इस ग्राम तथा नजदीक के कई ग्रामों की सेवागत कई वर्षों से कर रहा है। जहाँ तक मुझे जानकारी है बनियापुर थाने का यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय है। पहले के निरीक्षणों से पता चलता है कि इस पुस्तकालय को बड़े-बड़ें लोगों का आशीर्वाद प्राप्त हो चुका है।

ह० उपेन्द्र सिंह

विद्यालय अवर निरीक्षक, बनियापुर

१२-९-५९

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रो० सत्यदेव सिंह
संसद सदस्य
(लोक सभा)

No-46/SDS/83
7, रायसीना रोड
नई दिल्ली
23-2-83

पूज्यवर आचार्य जी
सादर प्रणाम,

आपका 17-2-83 का कृपा-पत्र मुझे मिला। मैं आपका छात्र ही नहीं, पारिवारिक सम्बन्ध में पुत्र के समान हूँ।

मैं आपके प्रति भक्ति-भाव रखता हूँ। वैसे विद्यार्थी जीवन में मैं आपके अनुपम व्यक्तित्व, सादगी, मृदुलभाषिता और आत्मीयता से ओत-प्रोत सरस सरल सुबोध जीवन से अनुप्राणित रहा हूँ।

दिल्ली का जो भी काम हो, आप शीघ्र ही यहाँ पधारें और आपकी आज्ञा का पालन करने में मैं अपने को सौभाग्यशाली मानूंगा। इससे मुझे परम सन्तोष और आत्मानन्द की अनुभूति मिलेगी।

आप सबों के आशीर्वाद से मैं दिल्ली में बैठा हूं और आप सबकी आज्ञा के पालन करने में मैं अपने इस दिल्ली-जीवन को सफल और धन्य मानूंगा।

सादर, सविनय,
डा० राधाकृष्ण शर्मा
मोहन नगर, छपरा
बिहार।

आपका आज्ञाकारी
सत्यदेव सिंह

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री कृष्ण राय 'हृदयेश'

हृदयेश-पथ, नखास
गाजीपुर (उ०प्रदेश)

८-८-८७

प्रिय डाक्टर साहब,

सप्रेम नमस्कार

आपके सौम्य व्यक्तित्व का प्रभाव मुझ पर बराबर रहेगा। आपमें सागर की गम्भीरता तो है ही, सद्विचारों और आचारों के भी रत्नाकर हैं। आप सपरिवार सानन्द रहें, इस शुभ कामना के साथ

शुभाकांक्षी
हृदयेश

सेवा में,
डा० राधा कृष्ण शर्मा

Perwez Alam
(Press Correspondent)
प्रवेज आलम
(संवाददाता)

☎ 536
office-RUBY LODGE
ChowKhandi, Saran
Resi—Moh. Qila Sasaram
821115 (Rohtes) Bihar

Date 1.1 89

Ref No B 100/3

सेवा में
डा० राधाकृष्ण शर्मा

मैं आपकी रचना को आमंत्रित करता हूं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप "जलावर्त में अपनी रचना प्रकाशित के लिए अवश्य प्रेषित करेंगे और पत्र व्यवहार अवश्य करेगें।

धन्यवाद

आपका
प्रवेज आलम

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गांधी मार्ग

गांधी विचार के सर्जनात्मक साहित्य का मासिक

२२१/२२३ दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२
फोन । २७२३९६/७/८ ० तार : सत्याग्रह, नई दिल्ली

2-9-97

प्रिय डा० शर्मा,

गांधी मार्ग का जुलाई-अगस्त 1987 का 'राष्ट्रीयता एकता' विशेषांक आप के पास पहुंच गया होगा, ऐसी आशा है। यह पत्र में गांधी मार्ग सपादक मंडल की तरफ से आपको कृतज्ञता अर्पण करने के लिये लिख रहा हूं। अभी तक जो एकाध राय हमें मिली है उनसे लगता है कि यह विशेपांक अच्छा तरह से स्वीकार किया गया है। उसके लिये भी हम आप सभी लेखकों और मित्रों के अभारी हैं।

आशा है भविष्य में भी आपकी मदद गांधी मार्ग को मिलती रहेगी।

आपका
देवी प्रसाद

डा० राधाकृष्ण शर्मा
छपरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0: In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वतन्त्रता आन्दोलन में मेरी भूमिका

अंग्रेजी राज्य में मेरा जन्म होने पर कोई जन्मपत्री नहीं लिखी गई। किन्तु गवंई विद्यालय में नामांकन होने पर १ जनवरी १९२० मेरा जन्म दिन लिख लिया गया। १९२० में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन शुरु हुआ। दस वर्ष के बाद फिर १९३०-३२ में सविनय अवज्ञा आन्दोलन हुआ। इसे नमक सत्याग्रह भी कहते हैं।

१९३० में, अपने ग्राम पिठौरी के बगल में बलुआ में सरकारी विद्यालय था उसी में मैं ५वें वर्ग का विद्यार्थी था। मैं १९३१-३२ में गड़रा में स्थित मध्य आंग्ल विद्यालय में छठा और सातवां क्लास का छात्र था।

उन दिनों मे मेरा ग्राम बनियापुर थाना राजनीति का एक प्रमुख केन्द्र था। ग्राम के दक्षिण भाग में मंगलदेव ब्रह्मचारी रहते थे। वे राजनीतिक पुरुष थे। उनके निवास स्थान पर राजनीतिक पुरुषों एवं महिलाओं की भीड़ लगी रहती थी। उनमें धनगडहा निवासी सरयुग ओझा का नाम बहुत प्रसिद्ध है। १९३०-३२ के आंदोलन में मंगलदेव ब्रह्मचारी और सरयुग ओझा बनियापुर थाना में बहुत ही सक्रिय नेता थे। इनके नेतृत्व में जहां-तहां नमक बनाने का कार्य होता था। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और देशी वस्तुओं तथा खादी का प्रचार किया जाता था।

मंगलदेव ब्रह्मचारी को एक साल के लिए जेल की सजा हुई[1]। सरयू ओझा तो बड़े ही साहसी और त्यागी पुरुष थे। राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में वे अपने धुन में मस्त थे। वे अपने परिवार के साथ आग में कूदने के लिए सबसे पहले तैयार थे[2]।

---

१ नागेन्द्र कुमार, इंडियन नेशनल मुभ मेंट, पटना १९७९, पृ०-११२

२ मेरे असहयोग के साथी, इलाहाबाद, १९३४, पृ०८६

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मंगलदेव ब्रह्मचारी और सरयू ओझा के अलावा भी कई अन्य लोग थे। इन सभी व्यक्तियों से प्रभावित होना स्वाभाविक था। मेरे प्रारंभिक गुरु चन्द्रेश्वर शर्मा भी राजनीति में गहरी रुचि रखते थे। अब मैंनेभी १०-११ वर्ष की उम्र से खादी पहनना शुरु किया। जुलूस में घूमने लगा और अन्य लोगों के साथ नारा लगाने लगा।

१९३४ से १९३६ तकमैं छपरा जिला स्कूल का छात्र था। छपरा में डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा कई अन्य नेताओं को देखने सुनने का अवसर मिला। १९३७ में मैंट्रीक पास करने के बाद पटना कॉलेजमें मेरानामांकन हुआ. १९३७ से १९४५ तक पटना में रहने का मुझे मौका मिला। यहां तो अखील भारतीय स्वर के नेता प्राय। आया करते थे। उन्हें भी देखने और सुनने का खूब मौका मिला। १९४० (मार्च) में रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में एक स्नातक छात्र के रुप में मैं उपस्थित हुआ था। उसी साल व्यक्तिगत सत्याग्रह भी हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन को गति बहुत तेज थी।

१९४२-४३ में मैं छठा वर्ष इतिहास का छात्र (पटना कालेज) था। मछुआटोली में स्थित गजाधर मंदिर छात्रावास में रहता था। उसी छात्रावास में रामयश सिंह भी जो एकमा थाना के धुरापाली ग्राम के निवासी थे, रहते थे। वे साइन्स कालेज में बी० एससी० के छात्र थे। ९ अगस्त और उसके बाद १९४२ में विशाल पैंमाने पर आन्दोलन शुरु हुआ था। ११ अगस्त को छात्रोंका एक विशाल जुलूस संगठित किया गया। इसका उद्येश्य था सचिवालय भवन पर राष्ट्रीय झण्डा फहराना। ३ बजे तक जुलूस सचिवालय परिसर में पहुंच गया। बड़ी भीड़ थी। ५ बजे शाम में ब्रिटिश सरकार की ओर गोली चली भगदड़ मची, कोलाहल मचा। कुछ व्यक्ति तो सदा के लिए वहां सो गये कुछ घायल होकर जमीन पर गिरगये। हम और रामयश अगल-बगल खड़े थे

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रामयश को एक भुजा में गोली लग गई। वे बेहोश गिर पड़े। मैं भी बेचैन व अधीर हो गया। फिर भी एक रिक्शा बुलाकर उन्हें उठाकर रिक्शा पर रखा। उनके खून से मेरे कपड़े भींग गये। रिक्शा चला। अजीब दृश्य था। अस्पताल में रात भर उसी कपड़े मे रहना पड़ा। कई घंटों के बाद गोली निकली और हम लोगों को कुछ राहत मिली। दस दिन से अधिक मैं रामयश सिंह की सेवा में तत्पर रहा। मेरे प्रति भी पुलिस की शंका बढ़ती रही। स्वस्थ हो जाने पर रामयश सिंह को जेल भेजा गया और मैं उसके बाद भूमिगत हो गया। रामयश सिंह ने अपने एक पत्र[1] में लिखा है—

१- १३-११-१९६१ पृ०२

I was hit with bullet in the left arm and within a few minutes I fell down unconscious. I was picked up by my friend, shri Radha Krishna Sharma' who was a student of Sixth year (History), Pstna college. now Head of the Department of History. Rajendra college, Chapra, who rushed to the general Hospital on a Rickshaw with me. His entire wearing apparel was drenched with blood oozing out of my arm. Some doctors who were standing on the road near Patna Junction, rendered me first aid. I was admitted in the General Hospital where I was X'rayed and operated and bullet was taken out from the body and huge quantity of blood was transfused The left hand had to be plasterd thrice and plaster had to be removed three times because bleeding did not stop. It was then detected that one nerve had been cut into two. The nerve had to be reunited and

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

the hand plasterered again. At about 11-30 in the night I gained consciousness. I remained in the Pospital for 18 days, My friend, Mr. Sharma, remaineb in the Hospitel for over a fortnight constantly attending upon me. I must candidly confess that it was mainly by virtue of his sincere service as also through the excellent arrangement in the Hospital that I started on my fair way to recovery.

Ram Yash Singh
13-11-61
Village & P. O. Ghurapali
P. S. EKma, District Saran.

★

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैनेजर प्रसाद सिंह Manager Prasad Singh

महामंत्री
सारण जिला स्वतंत्रता सेनानी संगठन
नन्दलाल टोला, छपरा
सारण (विहार)

General Secretary
Saran Freedom Fighters'
Orgaistion
Nand Lal Tola, Chapra
SARAN (BIHAR)

ताम्रपत्र प्राप्त स्वतंत्रता सेनानी
पी॰ पी॰ ओ॰ संख्या-7653

पत्रांक— Date 18-3-93

मैं डा॰ राधा कृष्ण शर्मा, पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग (पी॰ जी॰) को बहुत वर्षो से व्यक्तिगत रूप से जानता हूं। ये सारण जिला के निवासी हैं और अपने छात्र जीवन में 1937 से 1943 ई॰ तक पटना वि॰ वि॰ (पटना कालेज) के छात्र थे। ये सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यों में गहरी अभिरूचि लेते रहे हैं। इन्होंने 1942 के राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। इनका कार्यं क्षेत्र पटना और सारण जिला था।

11 अगस्त 1942 को इन्होंने पटना में आयोजित विशाल जुलूस में अपने अन्य छात्र साथियों के साथ भाग लिया और ये सचिवालय गोलीकांड के अवसर पर उपस्थित थे। संयोग से इनके एक साथी श्री रामयश सिंह, ग्रा॰ पो॰ धुरापाली, सारण को एक हाथ में गोली लग गई। इन्होंने उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाया और कुछ दिनों तक उनकी सेवा में भी लगे रहे। अच्छा होने पर रामयश को जेल भेज दिया गया और शर्मा जी भूमिगत होकर कार्य करने लगे।

पटना मे इनके ठहरने और इनकी अन्य गतिविधियों से इनके पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य चिन्तित रहने लगे। 1944 में तो इनके पिता का देहांत भी हो गया। शर्मा जी 1942-43 में छठे वर्ष (इतिहास) के छात्र थे। मानसिक चिंता और तनाव के कारण इनकी पढ़ाई बहुत बाधित हो गई ये अस्वस्थ भी हो गये। ये 1943 में एम॰ ए॰ की परीक्षा में शामिल नहीं हो सके। लॉ को परीक्षा भी नहीं दे सके। 1945 में इन्होंने एम॰ ए॰ की डिग्री हासिल की।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शर्माजी ने अंग्रेजी राज्य में 1941 में बी॰ ए॰ आनर्स कर लेने के बावजूद भी किसी सरकारी नौकरी के लिऐ कहीं कोई आवेदन पत्र नहीं दिया। इन्होंने 2 अक्टूबर 1943 ई॰ को अपने ग्राम में ऐक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की। 1950 में सारण के तत्कालीन जिलाधिकारी और 5 अप्रैल 1952 को बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री तथा नेपाल के तत्कालीन यातायात मन्त्री ने इस पुस्तकालय को देखा और सराहा।

शर्माजी विश्वविद्यालय (शिक्षा) को सेवा में कार्यरत रहे। ये लगातार समाज सेवा और राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा में लगे रहें हैं। उन्होंने दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं। इनकी एक पुस्तक 1958 ई॰ में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के द्वारा पुरस्कृत को गई है। इनको पुस्तकें बिहार और इसके बाहर भी विश्वविद्यालयों में स्वीकृत हैं। ये बाल साहित्य के भी लेखक हैं। देश को पत्र-पत्रिकाओं में भी इनके लेख प्रकाशित होते रहें हैं।

मैं ऐसे देश भक्त और हिन्दी सेवी को स्वतंत्रा सेनानी सम्बन्धी पेंशन व अन्य सारी सुविधाएं देने के लिए जोरदार अनुशंसा करता हू। जहां तक जल्द हो सके, इनके आवेदन पत्र पर कारवाई की जाय। लेखन पठन-पाठन समाज सेवा, पुस्तकालय प्रसार, राष्ट्रीय एकता व साम्प्रदायिक सद्भावना सम्बन्धो कार्यों में शर्मा जी आज भी वैसे ही व्यस्त हैं जैसे पहले थे, लेकिन जीवन की आवश्यताओं को पूरा करने में ये आज भी असमर्थ हैं।

मैनेजर प्रसाद सिंह
18-3-93

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

K. P. Shrivtava
Founder Secretary
Brajkishore Kinder Garten
Chapra

Phone : 2458
Pin Code-841301

मैंने डा० राधा कृष्ण शर्मा, पिता का नाम स्व० रामाज्ञा शर्मा, मोहन नगर, छपरा, बिहार के स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेंशन हेतु आवेदन पत्र को आद्योपान्त पढ़ा। इसके साथ संलग्न स्वतन्ता सेनानी रामयश सिंह के बयान को भी मैंने गौर से पढ़ा। ज्ञातव्य है कि ११ अगस्त १९४२ को सचिवालय परिसर में उन्हें गोली लगी। उनकी सेवा-सुश्रुषा में शर्माजी जुटे रहे।

श्री शर्मा को अस्पताल मुक्ति के समय पुलिस ने छापा मारने और पकड़ने का दौर दौरा प्रारम्भ किया तो कुशलता पूर्वक पुलिस को नजर बचाकर डा० राधा कृष्ण शर्मा फरार हो गये और भूमिगत होकर राष्ट्रीय आन्दोलन में संलग्न हो गये।

१ अगस्त १९४३ से २३ फरवरी १९४३ तक मैं भूमिगत था और आजाद दस्ता के कार्यों में व्यस्त था। इसी सन्दर्भ में डा० शर्मा से कई स्थलों पर मुझे भेंट हुई थी और मैंने उन्हें पूर्ण तत्परता के साथ आन्दोलन में पुलिस की नजर से बचते हुए संघर्षरत पाया।

इस तथ्य की पुर्ति उनके शिक्षा सम्बन्धी विश्वविद्यालयी प्रमाण पत्र हैं। वे १९४२ में षष्टम् वर्ष (इतिहास) के छात्र थे पर पुलिस की धर-पकड़ एवं व्यवधान के कारण उन्हें पढ़ाई स्थगित करनी पड़ी। फलतः उन्हें दो वर्ष की पूरी क्षति उठाकर १९४५ में परीक्षा देने का अवसर प्राप्त हुआ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह उनकी डिग्री और पोस्ट डिग्री प्रमाण पत्र देखने से प्रकट होगा।

इस तरह श्री शर्मा स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन के हकदार हैं और इन्हें पेंशन प्राप्त होना चाहिये।

कपिल देव प्रसाद श्रीवास्तव
27–5-93
प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी
पी० पो० ओ० 781/पोल. सेक.
डाकबंगला रोड, छपरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूरभाष । ६२४६२

बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी (इ)

सदाकत आश्रम, पटना-८०००१०

स्वतंत्रता सेनानी प्रकोष्ठ

पत्रांक.........   दिनांक-१३-७ १९६३

शिवनाथ सिंह
  संयोजक

मैं पिछले कई वर्षों से डा० राधाकृष्ण शर्मा, सुपुत्र स्व० रामाज्ञा शर्मा मोहन नगर, छपरा को बहुत निकट से जानता हूं। ये छात्र जीवन में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते थे। १९४२-४३ में पटना विश्वविद्यलय में एम० ए० (अंतिम) के छात्र थे। इन्होंने १९४२ के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था। इस आशय का समाचार भी कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है।

११ अगस्त, १९४२ को पटना में छात्रों का एक विशाल जुलूस निकला था। सचिवालय पर झण्डा फहराना था। सचिवालय परिसर में गोली कांड हुआ। उस अवसर पर डा० शर्मा अपने एक साथी रामयश सिंह के साथ उपस्थित थे। रामयश सिंह को गोली लगी थी और उन्हें शर्मा जी ने अस्पताल पहुंचाया और पुलिस की नजर से बचते हुए कुछ दिनों तक उनकी सेवा भी की। उसके बाद ये भूमिगत होकर कार्य करने लगे। ११ अगस्त, १९४२ से ३० अक्टूबर, १९४३ तक भूमिगत रहे।

इस तरह इनकी एम० ए० की पढ़ाई में बहुत बाधा पहुंची। ये मैंट्रीक आई० ए० और बी० ए० आनर्स की परीक्षाओं में नियमित रूप से सम्मिलत और उतीर्ण होते रहे किन्तु एम० ए० की परीक्षा में १९४३ में सम्मिलत नहीं होकर १९४५ में सम्मिलत हो सके। इनकी डिग्रियों को देखने से ये बातें स्पष्ट हो जाती है।

संलग्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचार तथा प्रमाणपत्रों और डिग्रियों का भी मैंने अवलोकन किया है।

अतः मैं अनुशंसा करता हूं कि डा० शर्मा को स्वतन्ता सेनानी सम्बन्धी पेंशन एवं अन्य सुविधाएं उपलब्ध करायी जाय।

शिवनाथ सिंह
संयोजक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

डा० गिरिजा देवी
संसद सदस्य
(लोकसभा

५२, साऊथ एवेन्यू, नई दिल्ल-११००११
दूरभाष : ३७९२०५४
१५८, छज्जूबाग, पटना- ८०००००१
दूरभाष : २२४४३४
साधनापुरो, छपरा-८४१३०१
दूरभाष : २९८५

मैं प्रो० राधा कृष्ण शर्मा को कई वर्षों से निकट से जानती हूं। ये १९४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन में बहुत सक्रिय थे। उस समय ये पटना विश्व-विद्यालय में एम० ए० अन्तिम वर्ष के छात्र थे। इन्होने ११ अगस्त १९४२ ई० को छात्रों के विशाल जुलूस में भाग लिया था। ये सचिवालय परिसर में झंडोतोलन आंदोलन और गोली काण्ड के अवसर पर भी वहां उपस्थित थे इनके एक साथी रामयश सिंह को जो पटना साइन्स कालेज में बी० एस० सी० का छात्र था, गोली लग गई थी। शर्मा जी ने उनकी बहुत मदद की थी। उसके बाद ये भूमिगत होकर राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान करते रहे। ये अगस्त ४२ से अक्टूबर ४३ तक भूमिगत रहे जिससे इनकी पढ़ाई बहुत बाधित हुई।

मैंने इनके सभी कागजातों का सावधानी पूर्वक अध्ययन किया है।

मैं अनुशंसा करती हूं कि इन्हें स्वतंत्रता सेनानी सम्बन्धी पेंशन तथा अन्य सुविधाएं अवश्य मिलनी चाहिये।

गिरिजा देवी
1-9-93
संसद सदस्य
लोकसभा
नई दिल्ली

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ABI AMERICAN BIOGRAPHICAL INSTITUTE INC.

Publisher of Biographical Reference works since 1967
Memder of the Publishers Association of the South
mep-The international Association of Independent Pnblishers
n Office 5126 Bur Oak Circle PO. Box 31226, Releigh, North Carolina 27622
Established 1967 ISBN Prefix 934544 Library Distribution Center 5436 Pine Top Circle, Releigh, North Carolina 27612 Fax : 919-781-8712

ebruary 3, 1995

adha Krishna Sharma
Mohan Nagar
hapra
ihar 841301, INDIA

ear Sharma :

I am pleased to announce your nomination for the nternational Cultural Diploma of Honor. This award is esigned exclusively for individuals who have achieved rominent positions in society beacause of exceptional ontributions to professions and communities.

Nominations are deliberately limited.

I invite you to read the enclosed leaflet which descries in detail the beauty and the significance of the Internaional Cultural Diploma of Honor. Limited, signed and umbered, it will surely possess a place of honor in your ome or office.

Sharma, I kindly ask that you consider thif important omination and respond by the date requested on your eaflet. It is personal pleasure and a privilage for me to ring you such a unique award worthy of your deads.

incerely,

J. M. Evans
Director
overning Board of Editors

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

The American Biographical Institute Research Association

J. M. Evans
Cnairman
J. S. Thomson
Vice-Chairmau

5126 Bur Oak Circle
P. O. Box 31226
Releigh, North Carolina
27622 U. S. A.

L. M. Kellander
Director of administration
L. D. Ring
Customer Seivice

World Headquaters
Fax Number 919-781-8712

April 14, 1995

Radha Krishna Sharma
Mohan Nagar, Chapra
Bihar 849 309 INDIA

Dear Sharma :

I have the diatinct pleasure of inviting you to becom a life fellow of an organization that should prove beneficial to you as a profossional and community leader.

The American Biographical Institute Research Associatioo is open to exceptional achievers who are cleariy dedicated to the highest of humanitarian ideals. The ABIRA provides a focal point to which numerous ideas are aimed by distinguished and well-informed in individuals living in

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

all parts of the world The Association's responsibility to its members lies in the recognition of each member's work and successes. There are many distinct advautages to Association membership. Among them are the resources available to you through fellow members; the access to free advertising end/or opportunities for publication in the Association magazine, and invitations to annual congresses and cultural tours held around the globe.

Sharma, I hope you will read further about the significant benefits of life Felloqship your invitational brochure. Your acceptance of life Fallowship will be the beginning of many privileges. Since invitations are strictly iimited, kindly request that you let us know your decision by the date on the acceptance form.

My sincere regards,

J. M. Evans

Chairman

Enclosurer

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

FI PUBLICATIONS
1369 Kashmere Gate,
Above Bata Shop
Delhi-110006, India.

Press Note

ef. FI : IE-101/95. 15 Jun 1995

ear Sir/Madam :

We are pleased to inform you that your name has been electeb/recommended by our research department for nclusion of your biographical-note in the proposed volume f our 'Indo-European who's who'.

"Indo-European who's who" is attempted to bring in loser touch personalities of India & Europe, and to further heir understanding and co-operation, the editors have set orth the 'Indo-Enropean who's who'.

Admission to the pages of this prestigious publication s not open in general It is limited to select-ones, and those who possess reference interest between India and Europe.

Enclosed herewith, please find your biographical-note gathered by our research staff which forms the basis of information of our interest in you. Please return it duly corrected and up-dated to enable us to inco porate your biographical -note written in our format and style in the aforesaid proposed volume.

The promptitude exercised by you in Immediate return of the biographical-note, will stand in our great esteem,

for co-operation among the peoples
or India & Europe.

Editors

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi